



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारतश्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



सोमवार, 29 सितंबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 10 • मूल्य: 5 रुपए

महिलाओं के लिए प्राकृतिक उपाय



एक श्रेणी ऐसी भी है कि जो ज्ञानी कहलाती है। इस श्रेणी में आने वाले भक्त मेरे निर्गुण और सगुण दोनों स्वरूपों का ज्ञान रखते हैं और वे मेरी निस्वार्थ भक्ति करते हैं।

पेज-10-11

दिल्ली का चैतन्यानंद कांड छात्राओं के शोषण केस में धमकी का नया खुलासा



@ भारतश्री ब्यूरो

राजधानी के एक निजी प्रबंधन संस्थान में यौन उत्पीड़न का मामला धीरे-धीरे संगीन होता जा रहा है। संस्थान में पढ़ने वाली 17 छात्राओं के यौन शोषण के आरोपी स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती के खिलाफ अब नए खुलासे सामने आए हैं। पुलिस जांच में यह बात साफ हुई है कि आरोपित बाबा न सिर्फ छात्राओं का उत्पीड़न करता था, बल्कि उनके परिवारों पर दबाव बनाने और शिकायत वापस लेने के लिए धमकी का सहारा भी ले रहा था। दक्षिण-पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त अमित गोयल के अनुसार, हाल ही में एक पीड़ित छात्रा ने बयान दर्ज कराते हुए बताया कि उसके पिता को 14 सितंबर को एक अंजान नंबर से धमकी भरा फोन आया था। इस कॉल में साफ कहा गया कि अगर केस वापस नहीं लिया गया तो अंजाम बुरा होगा। जांच में पता चला कि कॉल करने वाला शख्स उत्तराखंड के बागेश्वर जिले का रहने वाला हरि सिंह कोपकोटी (38 वर्ष) है।

पुलिस ने हरि सिंह को उसके घर से गिरफ्तार कर दिल्ली लाया। पूछताछ में उसने बताया कि वह स्थानीय नगरपालिका में नौकरी करता है और पिछले साल एक परिचित के जरिए आरोपी चैतन्यानंद के संपर्क में आया था। पुलिस पूछताछ में हरि सिंह ने स्वीकार किया कि चैतन्यानंद के ही कहने पर उसने छात्रा के पिता को धमकाया था।

आरोपी बाबा की गिरफ्तारी और संस्थान में पूछताछ

दिल्ली पुलिस ने आरोपी चैतन्यानंद को कुछ दिन पहले उत्तराखंड से गिरफ्तार किया था। गिरफ्तारी के बाद उसे जांच के लिए उसके ही संस्थान लाया गया। यह वही संस्थान है जहां वह अध्यक्ष हुआ करता था और जहां

छात्राओं ने उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि संस्थान और छात्रावास के परिसर की गहन जांच की गई। यहां लगे सीसीटीवी कैमरों के बारे में जानकारी जुटाई गई। जांच में सामने आया कि छात्रावास के बाथरूम के बाहर भी सीसीटीवी कैमरे लगे थे और इनके फुटेज आरोपी के मोबाइल फोन से जुड़े हुए थे।

तीन महिला सहयोगियों से आमना-सामना पूछताछ

पुलिस अब इस मामले की गूँथियों को सुलझाने के लिए आरोपी बाबा की तीन महिला सहयोगियों को भी सामने लाकर पूछताछ करने की योजना बना रही है। ये सभी श्री शारदा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन मैनेजमेंट में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। इन पर आरोप है कि ये छात्राओं पर दबाव डालती थीं और बाबा द्वारा भेजे गए आपत्तिजनक संदेशों को हटाने के लिए मजबूर करती थीं। पुलिस सूत्रों के अनुसार, इन तीनों के खिलाफ गंभीर आरोप हैं। छात्राओं ने बयान दिया है कि वे संस्थान में रहते हुए लगातार भय और दबाव महसूस करती थीं।

छात्राओं का दर्द और चुप्पी तोड़ने की हिम्मत

इस मामले की सबसे बड़ी बात यह है कि 17 छात्राओं ने एक साथ आवाज उठाई। समाज में अक्सर ऐसे मामलों में पीड़ित अकेले पड़ जाते हैं, लेकिन यहां छात्राओं ने एकजुट होकर अपनी बात पुलिस तक पहुंचाई। यह साहसिक कदम न केवल आरोपी के खिलाफ कार्रवाई को मजबूत करता है, बल्कि उन तमाम छात्राओं के लिए भी हौसला है जो कभी डर और दबाव के चलते चुप रहती हैं।

धर्म की आड़ में अपराध

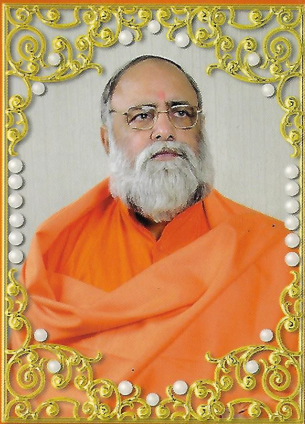
चैतन्यानंद खुद को स्वामी और धर्मगुरु बताता था। समाज में उसकी पहचान एक बाबा के रूप में थी, लेकिन

उसकी असलियत सामने आने के बाद लोग हतप्रभ हैं। सवाल यह है कि कैसे शिक्षा और धर्म की आड़ में ऐसे लोग अपने नापाक इरादों को अंजाम देते हैं और लंबे समय तक बच निकलते हैं। फिलहाल पुलिस की कार्रवाई तेज हो गई है। आरोपी बाबा और उसके सहयोगियों के खिलाफ यौन उत्पीड़न, धमकी और आपराधिक साजिश के तहत केस दर्ज किया गया है। इसके साथ ही उसके मोबाइल फोन और कॉल डिटेल्स की भी जांच की जा रही है। समाज में ऐसे मामलों को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं कि छात्राओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी है? अगर शिक्षा संस्थान ही असुरक्षित हो जाएं तो युवा पीढ़ी का भविष्य कहां सुरक्षित होगा?

विदेश से लौटने के बाद दबाव बनाने की कोशिश

जांच में यह भी सामने आया कि चैतन्यानंद विदेश गया हुआ था और 6 अगस्त को भारत लौटा। लौटने के बाद उसने लगातार पीड़िताओं और उनके परिवारों पर दबाव बनाने की कोशिश की। धमकी भरे फोन कॉल इसी सिलसिले का हिस्सा थे। दिल्ली पुलिस अब इस मामले में तेजी से चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी में है। आरोपी बाबा और उसके करीबी सहयोगियों के खिलाफ सबूत जुटाए जा रहे हैं। पुलिस अधिकारियों का मानना है कि यदि सभी पीड़ित छात्राएं मजबूत होकर गवाही देती हैं तो आरोपी को कठोर सजा से बचना मुश्किल होगा। स्वामी चैतन्यानंद केस सिर्फ एक संस्थान या एक व्यक्ति का मामला नहीं है, बल्कि यह उन तमाम सवालों की गूंज है जो आज समाज और शिक्षा जगत के सामने खड़े हैं। धर्म और शिक्षा की आड़ में अपराध करने वाले लोग न केवल छात्राओं का भविष्य बर्बाद करते हैं बल्कि पूरे समाज की आस्था को भी चोट पहुंचाते हैं।

सद्गुरु वाणी



दिव्य पाठ से भक्ति, मुक्ति, संतान, अर्थ, काम सहित हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण की जा सकती हैं। यह तथ्य पूरी तरह शास्त्रोक्त है।

जिन असाध्य रोगों का इलाज इस जगत में नहीं है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ स्वीकार कर रहा है।

प्रभु कृपा के आलोक से निर्धनता को सम्पन्नता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में मां लक्ष्मी की कृपाओं का वास है।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



भारत की शानदार जीत

एशिया कप 2025 फाइनल में पाकिस्तान को हराया

रोमांच का मैदान: भारत-पाकिस्तान का महामुकाबला

28 सितंबर 2025 को दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में क्रिकेट प्रेमियों के लिए एक ऐतिहासिक दिन था, जब भारत और पाकिस्तान एशिया कप 2025 के फाइनल में आमने-सामने हुए। यह मुकाबला सिर्फ एक खेल नहीं था, बल्कि दो पड़ोसी देशों के बीच जज्बे, रणनीति और धैर्य की परीक्षा थी। भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया, जिसने पूरे मैच का रुख तय कर दिया। पाकिस्तान की पारी 146 रनों पर सिमट गई, और भारत ने इस लक्ष्य को 19.4 ओवर में 5 विकेट खोकर हासिल कर लिया। यह जीत भारत की नौवीं एशिया कप ट्रॉफी थी, जो उनके दबदबे को और मजबूत करती है।

मैच से पहले माहौल में तनाव था, क्योंकि दोनों टीमों टूर्नामेंट में पहले तीन बार भिड़ चुकी थीं, और हर बार भारत ने जीत हासिल की थी। लेकिन फाइनल में कुछ अलग था। स्टेडियम में हजारों दर्शक, और दुनिया भर में लाखों लोग टीवी और सोशल मीडिया पर चिपके हुए थे। भारत की गेंदबाजी ने शुरू से ही दबाव बनाया, जबकि पाकिस्तान की बल्लेबाजी ने शुरुआती जोश दिखाया, लेकिन जल्द ही ढह गई। भारत की पारी में शुरुआती झटके लगे, फिर भी तिलक वर्मा जैसे युवा सितारे ने सब संभाल लिया। यह जीत हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या क्रिकेट सिर्फ खेल है, या यह देशों के बीच एक अनकहा संवाद भी बनाता है?

गेंद और बल्ले की कहानी: कैसे पलटा खेल

पाकिस्तान ने बल्लेबाजी शुरू की, और उनकी शुरुआत शानदार रही। साहिबजादा फरहान और फखर जमान ने पहले विकेट के लिए 84 रनों की साझेदारी की, जिसमें फरहान ने 38 गेंदों पर 57 रन और फखर ने 35 गेंदों पर 46 रन बनाए। 10 ओवर में 107 रन देखकर लग रहा था कि पाकिस्तान 200 के पार जाएगा। लेकिन फिर भारत की गेंदबाजी ने कमाल दिखाया। कुलदीप यादव ने अपने स्पिन जादू से सबको हैरान कर दिया, 4 विकेट लिए और सिर्फ 30 रन दिए। उनके एक ओवर में 3 विकेट गिरे, जिसने पाकिस्तान के मध्यक्रम को तहस-नहस कर दिया। वरुण चक्रवर्ती और अक्षर पटेल ने 2-2 विकेट लिए, जबकि जसप्रीत बुमराह ने भी 2 विकेट झटके। पाकिस्तान की पूरी पारी 19.1 ओवर में 146 रनों पर सिमट गई। फहीम अशरफ ने अंत में थोड़ा संघर्ष किया, लेकिन वह नाकाफी था।

भारत की गेंदबाजी रणनीति ने दिखाया कि सही समय पर सही फैसले कितने महत्वपूर्ण होते हैं। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पहले गेंदबाजी चुनकर पिच का फायदा उठाया, जो स्पिनरों के लिए मददगार थी। कुलदीप का एक ओवर तो ऐसा था, मानो गेंद बात कर रही हो। पाकिस्तानी बल्लेबाज उनके सामने कन्फ्यूज हो गए, और शाहीन शाह



अफरीदी जैसे बड़े नाम भी रन नहीं बना पाए। यह पारी हमें सिखाती है कि क्रिकेट में शुरुआत जितनी शानदार हो, अगर मध्यक्रम संभल न पाए, तो सब बेकार हो जाता है।

अब भारत की बल्लेबाजी की बारी थी। लक्ष्य 147 रन। आसान लग रहा था, लेकिन शुरुआत में ही झटके लगे। पहले ओवर में 2 विकेट गिरे, और 20 रनों पर तीसरा विकेट भी चला गया। दबाव बढ़ गया था। संजू सैमसन ने थोड़ा संभाला, लेकिन असली कमाल तिलक वर्मा ने किया। उन्होंने 53 गेंदों पर नाबाद 69 रन बनाए, जिसमें शानदार शॉट्स और धैर्य दोनों दिखे। शिवम दुबे ने 22 गेंदों पर 33 रन बनाए, जिसमें 2 छक्के शामिल थे। दोनों ने पांचवें विकेट के लिए 60 रनों की साझेदारी की, जो 40 गेंदों में बनी और मैच का टर्निंग पॉइंट साबित हुई। 15वें ओवर में तिलक ने हारिस रऊफ पर 17 रन ठोके, जिसने भारत को जीत के करीब ला दिया। आखिरी ओवर में तिलक का छक्का जीत का प्रतीक बना। 2 गेंद बाकी थीं, और भारत ने 5 विकेट से जीत हासिल की।

पाकिस्तान के गेंदबाजों ने कोशिश की, खासकर फहीम अशरफ ने 3 विकेट लिए। लेकिन तिलक के सामने उनकी एक न चली। यह चेज हमें बताता है कि दबाव में धैर्य और आत्मविश्वास कितना जरूरी है। तिलक ने बाद में कहा, “मैंने सिर्फ गेंद पर ध्यान दिया और दिमाग शांत रखा।” स्टेडियम में दोनों देशों के प्रशंसकों की तालियां

गूंजीं, लेकिन मन में सवाल बाकी था—क्या यह जीत सिर्फ स्कोरबोर्ड की थी, या उससे कहीं ज्यादा?

ट्रॉफी का विवाद: खेल से बाहर की हलचल

मैच खत्म होने के बाद असली ड्रामा शुरू हुआ। प्रेजेंटेशन सेरेमनी में एशियन क्रिकेट काउंसिल के चेयरमैन मोहसिन नकवी ट्रॉफी लेकर आए। वे पाकिस्तान के गृह मंत्री भी हैं। लेकिन भारत ने ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। कारण था दोनों देशों के बीच चल रहा राजनीतिक तनाव। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने साफ कहा, “हम किसी युद्धरत देश के प्रतिनिधि से ट्रॉफी नहीं लेंगे।” नकवी ट्रॉफी लेकर वापस चले गए। मेडल्स भी नहीं बांटे गए। सेरेमनी देर तक रुकी रही, और पाकिस्तानी खिलाड़ी ड्रेसिंग रूम में इंतजार करते रहे।

यह घटना क्रिकेट के उस जज्बे पर सवाल उठाती है, जो मैदान पर दोनों टीमों को एकजुट करता है। मैदान के बाहर की राजनीति ने खेल की चमक को थोड़ा फीका कर दिया। बीसीसीआई के सेक्रेटरी देवजित सैकिया ने इसे खेल भावना के खिलाफ बताया और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) में शिकायत की बात कही। दूसरी तरफ, पाकिस्तान के कप्तान सलमान अली आघा ने कहा, “भारत ने क्रिकेट का अपमान किया है।” दोनों तरफ से बयानबाजी तेज हो गई। हारिस रऊफ को

आईसीसी के कोड ऑफ कंडक्ट तोड़ने के लिए जुर्माना लगा। सूर्यकुमार यादव को भी उत्तेजक टिप्पणियों के लिए चेतावनी मिली। कोई हैडशेक नहीं हुआ। नजरें नहीं मिलीं। भारत के कोच गौतम गंभीर डेस्क पर मुक्का मारते दिखे।

सोशल मीडिया पर हंगामा मच गया। तिलक का हार्ट साइन, रिकू सिंह का दौड़ना, और सूर्यकुमार का काल्पनिक ट्रॉफी उठाने का मजेदार अंदाज वायरल हो गया। बीसीसीआई ने अपनी टीम को 21 करोड़ रुपये का इनाम दिया, भले ही ट्रॉफी उनके हाथ में न आई। यह सवाल उठता है—क्या यह फैसला सही था? एक तरफ सिद्धांतों की बात, दूसरी तरफ खेल की भावना। भारतीय प्रशंसक गर्व से भरे थे, जबकि पाकिस्तानी प्रशंसक नाराज। यह विवाद हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्रिकेट कब पूरी तरह खेल बन जाएगा, बिना किसी बाहरी विवाद के।

सितारों की चमक: कौन बना मैच का हीरो?

इस फाइनल में कई खिलाड़ी चमके। तिलक वर्मा ने नाबाद 69 रनों की पारी खेली, जिसमें दबाव में उनकी शांति और आत्मविश्वास साफ दिखे। उन्होंने कहा, “टीम ने मुझ पर भरोसा दिखाया, और मैंने सिर्फ प्रक्रिया पर ध्यान दिया।” शिवम दुबे ने अपने 2 छक्कों के साथ 33 रन बनाकर तिलक का बखूबी साथ दिया। कुलदीप यादव की गेंदबाजी तो जैसे जादू थी—4 विकेट, जिसमें एक ओवर में 3 विकेट। वरुण चक्रवर्ती और अक्षर पटेल ने भी 2-2 विकेट लेकर पाकिस्तान को रोक दिया। पाकिस्तान की तरफ से साहिबजादा फरहान और फखर जमान ने शुरुआत में शानदार बल्लेबाजी की, लेकिन मध्यक्रम के ढहने से उनकी मेहनत बेकार गई। फहीम अशरफ ने गेंद और बल्ले दोनों से कोशिश की, लेकिन तिलक और कुलदीप के सामने उनकी एक न चली।

पूरा टूर्नामेंट देखें, तो अभिषेक शर्मा को प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया। उनकी आक्रामक बल्लेबाजी ने सबको प्रभावित किया। सूर्यकुमार यादव ने अपनी पहली फाइनल कप्तानी में शानदार रणनीति दिखाई। कोच गौतम गंभीर का जोश खिलाड़ियों में साफ दिखे। दूसरी तरफ, सलमान अली आघा ने पाकिस्तान को एकजुट रखने की कोशिश की, लेकिन उनका प्रोटेस्ट में चेक फेंकना चर्चा में रहा। ये खिलाड़ी सिर्फ रन या विकेट नहीं बनाते; वे सपने बुनते हैं। तिलक हैदराबाद से, कुलदीप उत्तर प्रदेश से—ये छोटे शहरों के लड़के हैं, जो बड़े मंच पर चमके। सोशल मीडिया पर एक बच्चे का वीडियो वायरल हुआ, जिसमें उसने कहा, “पाकिस्तान हारता ही रहता है, कुछ तो करो।” यह सुनकर हंसी आई, लेकिन दर्द भी हुआ। क्या क्रिकेट सिर्फ जीत-हार है, या यह एकजुट होने की प्रेरणा भी देता है?

पीएम मोदी का राजस्थान दौरा ऊर्जा और रोजगार की नई सुबह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सितंबर 25, 2025 को राजस्थान का दौरा एक ऐसा मौका था, जब राज्य की धरती पर विकास की नई हवा चली। बांसवाड़ा में पहुंचे पीएम ने न सिर्फ नौजवानों को नौकरियों के पत्र बांटे, बल्कि एक बड़े परमाणु ऊर्जा संयंत्र की नींव भी रखी। साथ ही, अरबों रुपये के प्रोजेक्ट शुरू किए, जो स्थानीय लोगों के लिए नई उम्मीदें जगाते हैं। ये सब कुछ ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास से जुड़ा है। लेकिन सवाल ये भी उठता है कि क्या ये कदम राजस्थान जैसे सूखाग्रस्त इलाके में लंबे समय तक फायदा पहुंचाएंगे?

बांसवाड़ा का स्वागत: नवरात्रि की धूम में विकास का संदेश

सितंबर 25, 2025 को सुबह ही प्रधानमंत्री मोदी उत्तर प्रदेश गए, जहां उन्होंने ग्रेटर नोएडा में उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार शो 2025 का उद्घाटन किया। ये शो व्यापारियों के लिए एक बड़ा मंच था, जहां देश-विदेश के लोग मिले और नए अवसरों पर बात की। लेकिन असली हाइलाइट राजस्थान था। दोपहर होते ही पीएम बांसवाड़ा पहुंचे, जहां हजारों लोग उनका इंतजार कर रहे थे। नवरात्रि का समय था, तो हवा में उत्साह और भक्ति का मिश्रण था। पीएम ने अपनी स्पीच में मां त्रिपुरा सुंदरी और मां महि को नमन किया। उन्होंने कहा कि ये दौरा ऊर्जा शक्ति को समर्पित है।

बांसवाड़ा राजस्थान का एक ऐसा जिला है, जहां ज्यादातर लोग आदिवासी समुदाय से हैं। यहां की जमीन उपजाऊ है, लेकिन बिजली और पानी की कमी ने हमेशा परेशान किया। पीएम का आना इसलिए खास था, क्योंकि उन्होंने स्थानीय इतिहास को याद किया। महाराणा प्रताप और राजा बांसिया भिल का जिक्र कर वे बोले कि ये भूमि संघर्ष और समर्पण की प्रतीक है। दौरे के दौरान एक छोटी सी तकनीकी खराबी हुई, जब प्रेजेंटेशन में गड़बड़ी आई। इससे एक आईएस अधिकारी को हटा दिया गया। ये घटना बताती है कि बड़े आयोजनों में छोटी गलतियां भी कितनी महंगी पड़ सकती हैं। लेकिन कुल मिलाकर, स्वागत भव्य था। लोग नारे लगाते रहे, “मोदी है तो मुमकिन है।” ये नजारा देखकर लगता है कि विकास का संदेश अब गांव-गांव तक पहुंच रहा है। क्या ये उत्साह लंबे समय तक बरकरार रहेगा? ये सोचने वाली बात है।

दौरे की शुरुआत से ही पीएम ने साफ कहा कि देश अब तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने पुरानी सरकारों की आलोचना की, कहा कि 2014 से पहले 2.5 करोड़ घरों में बिजली नहीं पहुंची थी। 18,000 गांव अंधेरे में थे। आज हालात बदल गए हैं। ये बातें सुनकर स्थानीय लोग ताली बजाते रहे। लेकिन कुछ लोग ये भी सोच रहे थे कि बांसवाड़ा जैसे दूरदराज इलाके में ये बदलाव कितनी जल्दी दिखेंगे। दौरे का ये हिस्सा न सिर्फ समारोह था, बल्कि एक संदेश भी। कि विकास अब सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं।

नौजवानों के चेहरे पर मुस्कान: 15,000 नियुक्ति पत्रों का तोहफा

दौरे का सबसे भावुक पल था जब पीएम ने 15,000



से ज्यादा नौजवानों को सरकारी नौकरियों के पत्र बांटे। ये पत्र राजस्थान सरकार के विभिन्न विभागों के लिए थे। जैसे, 5,770 पशु परिचर, 4,190 जूनियर असिस्टेंट, 1,800 जूनियर इंस्ट्रक्टर, 1,460 जूनियर इंजीनियर और 1,200 तृतीय श्रेणी स्तर-2 शिक्षक। कल्पना कीजिए, एक साथ इतने युवाओं को नौकरी मिलना। उनके परिवारों में खुशी की लहर दौड़ गई। पीएम ने कहा, “ये नौकरियां आपके सपनों को साकार करेंगी।”

राजस्थान में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या रही है। खासकर आदिवासी इलाकों में। ये पत्र वितरण इसलिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि ये सीधे स्थानीय युवाओं को फायदा पहुंचाएगा। एक युवा ने बताया कि वो सालों से परीक्षा देता आ रहा था। अब नौकरी मिली तो परिवार का बोझ कम होगा। पीएम ने स्पीच में जोर दिया कि सरकार युवाओं को मौके दे रही है। उन्होंने पीएम कुसुम योजना का जिक्र किया, जो किसानों को सोलर पंप देती है। इससे ग्रामीण इलाकों में रोजगार बढ़ेगा।

लेकिन सवाल ये भी है कि 15,000 नौकरियां काफी हैं? राजस्थान में लाखों युवा नौकरी की तलाश में हैं। ये कदम अच्छा है, लेकिन और प्रयासों की जरूरत है। दौरे के दौरान एक किसान ने पीएम से आलू के दामों पर मजाक किया, “आलू से सोना बन गया।” पीएम हंस पड़े। ये छोटी सी बात दिखाती है कि लोग खुश हैं, लेकिन रोजमर्रा की परेशानियां अभी भी बनी हुई हैं। फिर भी, ये पत्र वितरण ने युवाओं में नई ऊर्जा भरी। अब वे सोच रहे हैं कि आने वाले दिनों में और क्या संभव है।

ये पहल न सिर्फ राजस्थान के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए मिसाल है। क्योंकि नौजवान ही देश का भविष्य हैं। पीएम ने कहा कि हम सबको मिलकर काम करना होगा। ये शब्द सरल हैं, लेकिन गहरा मतलब रखते हैं। क्या युवा इस विश्वास पर खरे उतरेंगे? ये समय बताएगा।

महि बांसवाड़ा परमाणु संयंत्र: स्वच्छ ऊर्जा की मजबूत नींव

दौरे का सबसे बड़ा ऐलान था महि बांसवाड़ा राजस्थान एटॉमिक पावर प्रोजेक्ट की नींव रखना। ये चार यूनिटों वाला संयंत्र होगा, हर यूनिट 700 मेगावाट की। कुल लागत 42,000 करोड़ रुपये। ये भारत का सबसे बड़ा स्वदेशी परमाणु संयंत्र होगा। प्रेशराइज्ड हेवी वॉटर रिएक्टर पर आधारित, ये संयंत्र साफ ऊर्जा देगा। पीएम ने कहा, “ये प्रोजेक्ट ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा।”

राजस्थान में बिजली की मांग बढ़ रही है। गर्मियां आती हैं तो कटौती आम हो जाती है। ये संयंत्र 2,800 मेगावाट बिजली पैदा करेगा, जो लाखों घरों को रोशन करेगा। साथ ही, ये स्थानीय रोजगार बढ़ाएगा। हजारों लोग निर्माण में लगे हैं। आदिवासी समुदाय को प्राथमिकता मिलेगी। लेकिन कुछ लोग चिंतित भी हैं। परमाणु ऊर्जा सुरक्षित है, लेकिन क्या पर्यावरण पर असर नहीं पड़ेगा? बांसवाड़ा नदी के किनारे है, तो पानी की उपलब्धता पर सवाल उठते हैं।

पीएम ने स्पीच में बताया कि देश अब स्वदेशी तकनीक पर जोर दे रहा है। ये संयंत्र एनटीपीसी और परमाणु ऊर्जा निगम का संयुक्त प्रोजेक्ट है। इससे भारत की कार्बन उत्सर्जन कम होगा। जलवायु परिवर्तन के दौर में ये जरूरी है। लेकिन सोचिए, क्या ये संयंत्र समय पर पूरा होगा? इतिहास बताता है कि ऐसे प्रोजेक्ट में देरी होती है। फिर भी, नींव रखना एक बड़ा कदम है। ये दिखाता है कि सरकार लंबी दूरी की सोच रखती है।

इसके अलावा, पीएम ने 925 मेगावाट का आरएसडीसीएल नोख सोलर पार्क उद्घाटित किया। फलोदी में ये पार्क एनटीपीसी 735 मेगावाट विकसित कर रहा है। सोलर प्रोजेक्ट जयसलमेर, जोधपुर, जोरावर जैसे इलाकों में फैले हैं। कुल 19,210 करोड़ का निवेश। ये सब मिलकर राजस्थान को ऊर्जा हब बनाएंगे। एक तरफ

परमाणु, दूसरी तरफ सोलर। ये संतुलन भविष्य के लिए अच्छा संकेत है।

बुनियादी ढांचे में नई गति: सड़क, पानी और रेल का जाल

पीएम ने सिर्फ ऊर्जा पर नहीं रुके। उन्होंने 1,22,100 करोड़ से ज्यादा के विकास कार्यों की शुरुआत की। पानी के प्रोजेक्ट 20,830 करोड़ के थे। इसमें इसारदा बांध, धौलपुर लिफ्ट प्रोजेक्ट, ताकली प्रोजेक्ट शामिल हैं। अजमेर में मोर सागर कृत्रिम जलाशय बनेगा। ये प्रोजेक्ट सूखे राजस्थान के लिए वरदान हैं। किसान सोच रहे हैं कि अब सिंचाई आसान होगी।

पेयजल आपूर्ति के लिए अमृत 2.0 के तहत 5,880 करोड़ के प्रोजेक्ट शुरू हुए। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर जैसे जिलों में पानी पहुंचेगा। सड़कों पर 2,630 करोड़ खर्च। भरतपुर में फ्लाईओवर, बनास नदी पर पुल। 116 अटल प्रगति पथ बनेंगे। बैरमेर, अजमेर, डूंगरपुर में हाईवे प्रोजेक्ट। स्वास्थ्य में 250 बेड का आरबीएम अस्पताल भरतपुर में खुला। जयपुर में आईटी सेंटर।

रेल में तीन ट्रेनें फ्लैग ऑफ कीं। वंदे भारत एक्सप्रेस बीकानेर-दिल्ली कैंट और जोधपुर-दिल्ली कैंट। उदयपुर सिटी-चंडीगढ़ एक्सप्रेस। ये ट्रेनें यात्रा को तेज करेंगी। लेकिन सवाल ये कि क्या ग्रामीण इलाकों तक रेल पहुंचेगी? दौरे में जीएसटी सुधारों का जिक्र भी था। सितंबर 22 से साबुन, शैंपू, जूते, सीमेंट पर टैक्स कम। ये आम आदमी के लिए राहत है।

आदिवासी कल्याण पर पीएम ने विस्तार से बोला। ट्राइबल मिनिस्ट्री बनी। पीएम जनमन योजना, धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान। 5 करोड़ से ज्यादा लोगों को फायदा। एकलव्य मॉडल स्कूल, वन धन योजना। जंगल उत्पादों का एमएसपी बढ़ा। ये कदम आदिवासियों को मुख्यधारा से जोड़ेंगे। लेकिन क्या भ्रष्टाचार की पुरानी बीमारी दोबारा न आए? ये चिंता बनी रहेगी।

व्यापार शो से स्थानीय प्रतिक्रियाएं: एक व्यापक नजरिया

दिन की शुरुआत उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार शो से हुई। ग्रेटर नोएडा में ये शो 2025 का बड़ा इवेंट था। पीएम ने उद्घाटन कर व्यापार को बढ़ावा दिया। राजस्थान दौरे के बाद ये शो विकास की पूरी तस्वीर पेश करता है। व्यापारी सोच रहे हैं कि नए प्रोजेक्ट से बाजार बढ़ेगा।

स्थानीय प्रतिक्रियाएं मिली-जुली हैं। ज्यादातर लोग खुश हैं। एक किसान ने कहा, “पीएम आए तो उम्मीद जगी।” लेकिन कुछ ने तकनीकी गड़बड़ी पर सवाल उठाए। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल हुए, जहां भीड़ का दावा गलत निकला। एक याचिका में पीएम पर आरोप लगे, लेकिन राजस्थान हाईकोर्ट ने खारिज कर दी। ये दिखाता है कि राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते हैं।

कुल मिलाकर, ये दौरा राजस्थान के लिए मील का पत्थर है। ऊर्जा, रोजगार, बुनियादी सुविधाएं। ये सब मिलकर आर्थिक विकास को गति देंगे। लेकिन सफलता तब होगी, जब आम आदमी को फायदा दिखे। क्या ये सपने हकीकत बनेंगे? समय जवाब देगा। राजस्थान अब नई राह पर है।

करूर की त्रासदी: एक रैली जो दुख की कहानी बन गई

तमिलनाडु का करूर शहर। सितंबर 2025 की 27 तारीख। सूरज की तपिश और उत्साह से भरा एक दिन। मशहूर तमिल अभिनेता और अब राजनेता जोसेफ विजय, जिन्हें लोग थलापति विजय के नाम से जानते हैं, अपनी नई पार्टी तमिलागा वेट्टी कझागम (टीवीके) की पहली बड़ी रैली करने वाले थे। लेकिन जो दिन उत्सव का होना था, वो मातम में बदल गया। एक भगदड़ ने कम से कम 40 ज़िंदगियों को छीन लिया, जिनमें 17 महिलाएं और 9-10 बच्चे शामिल थे। 100 से ज्यादा लोग घायल हुए। ये सिर्फ एक हादसा नहीं था, बल्कि एक सबक था जो हमें राजनीतिक रैलियों की सुरक्षा, सिनेमा और राजनीति के मेल, और भीड़ प्रबंधन की कमियों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है।

उत्साह से शुरू, दर्द पर खत्म: उस दिन की कहानी

करूर के एक मैदान में सुबह से ही लोग जुटने लगे थे। विजय को देखने का जोश, उनकी नई पार्टी का उत्साह, और तमिलनाडु की सियासत में कुछ नया होने की उम्मीद। आयोजकों ने कहा था कि विजय दोपहर 12 बजे आएंगे। लेकिन मैदान में 27,000 से ज्यादा लोग पहुंच गए, जबकि जगह सिर्फ 10,000 के लिए थी। सुबह से दोपहर, फिर दोपहर से शाम। विजय नहीं आए। लोग गर्मी में इंतजार करते रहे। पानी की कमी थी, खाने का कोई ठीक इंतजाम नहीं। शौचालय भी नाकाफी। फिर शाम 7:30 बजे विजय पहुंचे। चार घंटे की देरी ने भीड़ को बेचैन कर दिया था।

विजय मंच पर चढ़े। भाषण शुरू किया। कुछ लोगों का कहना है कि उन्होंने एक गाना गाया, जिसमें डीएमके नेता वी. सेन्थिलबालाजी पर तंज कसा। इसे '10 रुपये वाला मंत्री' कहा। भीड़ में हलचल बढ़ी। उत्साह चरम पर था, लेकिन जगह की तंगी ने सब बिगाड़ दिया। अचानक बिजली चली गई। अंधेरे में अफरा-तफरी मच गई। लोग एक-दूसरे पर गिरने लगे। चीखें गुंजीं। भगदड़ शुरू हो गई। पुलिस ने बचाव की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अस्पतालों में घायल और मृतकों की संख्या बढ़ती गई। पहले 36 मौतें बताई गईं, फिर 38, और अब 40 की पुष्टि हुई। इनमें 22 साल की ब्रिंदा भी थीं, जो अपने बच्चे के साथ रैली में आई थीं। एक छोटी सी खुशी की तलाश में। लेकिन वो खुशी हमेशा के लिए दर्द बन गई।

मैदान खाली हो गया। जूतों, चप्पलों और बिखरे सामान का ढेर रह गया। एक स्थानीय निवासी ने कहा, "सुबह लोग हंसते-खुश होते आए थे, लेकिन शाम तक सिर्फ आंसू बचे।" विजय के फैसले उन्हें प्यार करते हैं, लेकिन इस हादसे ने सवाल उठाए। क्या इतनी बड़ी भीड़ को संभालने की तैयारी थी? क्या सुरक्षा को गंभीरता से लिया गया? ये सवाल करूर के लोगों के मन में ही नहीं, पूरे देश के लिए हैं।



क्यों हुआ ये हादसा: लापरवाही और कमियों की सच्चाई

इस त्रासदी की एक वजह नहीं, कई थीं। सबसे बड़ी, भीड़ का गलत अनुमान। आयोजकों को 10,000 लोगों की उम्मीद थी, लेकिन 27,000 आए। तमिलनाडु के डीजीपी ने साफ कहा, "हम किसी पर इल्जाम नहीं लगाते, लेकिन हकीकत यही है।" विजय की देरी ने हालात बिगाड़े। चार घंटे इंतजार। गर्मी, पानी की कमी, और सुविधाओं का अभाव। एक गवाह ने बताया, "लोग बेहोश होने लगे थे। बिजली गई तो डर और बेचैनी बढ़ गई।"

सुरक्षा व्यवस्था भी कमजोर थी। पुलिस की संख्या कम। बैरिकेडिंग ठीक नहीं। टीवीके के आयोजकों पर लापरवाही का इल्जाम लगा। विजय के करीबी और टीवीके के महासचिव एन. आनंद पर culpable homicide का केस दर्ज हुआ। पुलिस का कहना है कि आयोजकों ने भीड़ प्रबंधन पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन क्या सिर्फ आयोजक दोषी हैं? नहीं। तमिलनाडु में 2026 के विधानसभा चुनाव नजदीक हैं। विजय की नई पार्टी और उनकी फैन फॉलोइंग ने सियासी हलचल बढ़ाई थी। लेकिन अनुभव की कमी साफ दिखी। एक एक्स पोस्ट में लिखा था, "भीड़ बेकाबू थी, प्लानिंग शून्य। हम हर बार यही गलती दोहराते हैं।"

विजय ने सफाई दी। उन्होंने कहा, "ये दुखद है। हमारी गलती नहीं, लेकिन जिम्मेदारी हमारी है।" टीवीके ने मृतकों के परिवारों को 20 लाख और घायलों को 2 लाख रुपये देने का ऐलान किया। लेकिन सवाल उठे।

विजय हादसे के बाद न परिवारों से मिले, न अस्पताल गए। वो चेन्नई लौट गए, प्राइवेट जेट से। एक विश्लेषण में इसे 'टोन-डेफ' यानी बेरुखी बताया गया। दूसरी तरफ, फैस का कहना है कि विजय बाद में मदद करेंगे। लेकिन सच ये है कि इस हादसे ने सिस्टम की कमियों को उजागर किया। सितारों की रैलियां तो आकर्षक होती हैं, लेकिन बिना मजबूत प्लानिंग के जानलेवा भी।

सियासत का रंग: इल्जाम, जवाब और जांच की राह

हादसे के बाद तमिलनाडु की सियासत गरमा गई। टीवीके ने डीएमके सरकार पर साजिश का इल्जाम लगाया। मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने तुरंत जांच का आदेश दिया। जस्टिस अरुणा जगदीश की अगुवाई में एक कमीशन बना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक जताया और पीएम नेशनल रिलीफ फंड से मृतकों के परिवारों को 2 लाख और घायलों को 50 हजार रुपये देने का ऐलान किया।

एक्स पर बहस छिड़ी। कुछ लोग सरकार को कोस रहे थे। एक पोस्ट में लिखा, "40 मौतें, लेकिन बड़े पत्रकार चुप। क्यों?" विपक्ष ने कहा कि सरकार ने सुरक्षा क्यों नहीं दी। डीएमके ने जवाब दिया, "रैली की परमिशन दी थी, लेकिन आयोजकों की जिम्मेदारी थी।" ये इल्जामों का दौर दिखाता है कि सियासत में सच से ज्यादा नजरिया मायने रखता है। विजय की छवि पर भी असर पड़ा। सिनेमा में वो हीरो हैं, लेकिन राजनीति में अभी उनकी परीक्षा बाकी है। एक एक्स पोस्ट में लिखा था, "नेतृत्व फैनबेस से नहीं, जिम्मेदारी से बनता है।"

जांच से कुछ उम्मीदें हैं। क्या ये साबित करेगी कि लापरवाही थी? या साजिश? करूर के लोग अभी दुख में हैं। विजय के चेन्नई के पानैयुर वाले घर पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। ये दिखाता है कि सियासत कितनी नाजुक हो सकती है। लेकिन असल सवाल ये कि क्या हम इससे सीखेंगे?

भविष्य की ओर: सबक और बदलाव की जरूरत

ये हादसा सिर्फ करूर या तमिलनाडु का नहीं, पूरे भारत के लिए सबक है। स्टाम्पेड की घटनाएं बार-बार क्यों होती हैं? विशेषज्ञों का कहना है कि भीड़ का गलत अनुमान और कमजोर प्लानिंग इसकी जड़ हैं। तमिलनाडु में सिनेमा और सियासत का मेल पुराना है। एम.जी. रामचंद्रन से लेकर अब विजय तक। ये मेल युवाओं को जोड़ता है, लेकिन बिना तैयारी के खतरा भी बनता है।

रैलियों में पानी, छाया, मेडिकल सुविधाएं, और मजबूत बैरिकेडिंग जरूरी हैं। समय का पालन भी। एक रिपोर्ट में लिखा था, "सुबह से शाम तक का इंतजार हादसे की नींव बना।" विजय की पार्टी नई है। वो सीखेंगे। सरकारें भी सख्त नियम बनाएंगी। लेकिन बदलाव की शुरुआत हमसे होनी चाहिए। एक एक्स पोस्ट में सही लिखा था, "हादसों को सामान्य न मानें। अपनी और दूसरों की ज़िंदगी की कीमत समझें।"

दक्षिण भारत के लोग इसे करीब से महसूस करते हैं। सितारे सियासत में आएंगे, लेकिन सुरक्षा पहले होनी चाहिए। ये हादसा हमें जगा सकता है। बस जरूरत है थोड़ी सी जागरूकता और कोशिश की।

भारत का मुसलमान भी दुनिया से ही प्रभावित

वैसे तो भारत का मुसलमान भी दुनिया से ही प्रभावित होता है लेकिन यदि हम वर्तमान समय में भारत तक अपनी चर्चा को सीमित रखें तो भारत का मुसलमान इस बात को तय नहीं कर पा रहा है कि उसे किस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। एक तरफ वह हिंसा भी करना चाहता है दूसरी तरफ गिरगिराना और रोना भी चाहता है तीसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट से संविधान की दुहाई भी मांगता है और यह तीनों कार्य एक साथ करना चाहता है जो किसी भी रूप में संभव नहीं है। यह बात सही है कि पिछले 60-65 वर्षों से भारत के मुसलमान ने कम्युनिस्ट और नेहरू परिवार को अपने मुट्ठी में कैद करके हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बना कर रखा मनमाने अत्याचार किए गए। लेकिन अब पिछले 12 वर्षों से हिंदुओं और मुसलमान को या तो बराबर का देखा जा रहा है जो मुसलमान को दबाया जाना महसूस हो रहा है। बात बिल्कुल सच है कि मुसलमान को दबाया जा रहा है क्योंकि बराबर करने के लिए उन्हें दबाया ही पड़ेगा। अब मुसलमान को यह तय करना था की क्या उन्हें दुनिया की सहानुभूति चाहिए क्या उन्हें संविधान के अनुसार न्याय चाहिए क्या वह पत्थर से और आंदोलन से मुकाबला करना चाहते हैं। लेकिन भारत का मुसलमान तीनों दिशाओं में एक साथ चलना चाहता है जो पूरी तरह अ संभव है और मुझे ऐसा लगता है कि मुसलमान को इससे बहुत नुकसान होगा क्योंकि मुसलमान पत्थर चलाएंगे दंगे करेंगे आंदोलन करेंगे तो उन्हें क्रश कर दिया जाएगा। उनके साथ अत्याचार होगा स्वभाविक है। यदि वे सहन करेंगे तब उन्हें संविधान या दुनिया की सहानुभूति मिल सकती है जो उनका स्वभाव नहीं है और इसीलिए आज भारत का मुसलमान संकट में है। कांग्रेस समेत विपक्ष को भी भारत की जनता साफ संदेश दे रही है कि मुसलमानों के साथ-साथ आप भी समाप्त होने वाले हो।

बजरंगमुनि

जब चैप्लिन मिले महात्मा से

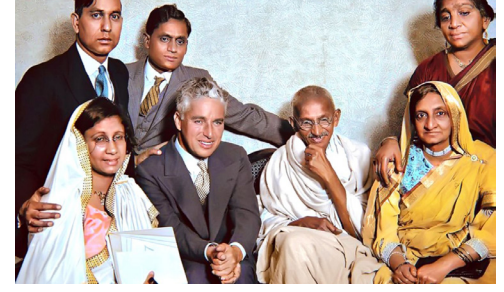
@ स्नेहवीर

उस क्षण की तस्वीर, उस खिड़की से जहाँ से चार्ली चैप्लिन यह दृश्य निहार रहे थे भारत तो भारत, इंग्लैंड में भी गांधीजी की प्रतिष्ठा का आलम यह था! अफ्रीका से भारत लौट आने के बाद गांधी केवल एक बार विदेश यात्रा पर गए: 1931 में गोलमेज वार्ता में शरीक होने। वार्ता तो विफल रही, लेकिन अंगरेजों का दिल उन्होंने बहुत जीत लिया। वे किसी ऊँचे होटल में नहीं रुके, पूर्वी लंदन के पिछड़े इलाके में सामुदायिक किंग्सली हॉल (अब गांधी फाउंडेशन) के एक छोटे-से कमरे में ठहरे। जमीन पर बिस्तर लगाया। लंदन की ठण्ड में भी अपनी वेशभूषा वही रखी - सूती अधधोती, बेतरतीब दुशाला, चप्पल। वे कोई तीन महीने वहाँ रहे।

यह तस्वीर तब की है जब लंदन प्रवास के दौरान चार्ली चैप्लिन गांधीजी से मिले। चैप्लिन हॉलीवुड में चरम प्रसिद्धि बटोर कर अपने वतन लौट आए थे। वे राजनेताओं से राजनीति की चर्चा में रुचि लेने लगे थे। अपनी फिल्म 'सिटी लाइट्स' के प्रीमियर के लिए वे लंदन में ही थे। किसी ने उन्हें सुझाया कि गांधीजी से मिलना चाहिए। उन्हें कैनिंग टाउन में डॉक्टर चुन्नीलाल कतियाल के यहाँ 22 सितम्बर, 1931 की शाम का वक्त दिया गया, जहाँ उस रोज गांधीजी को जाना था।

गांधीजी से मुलाकात का दिलचस्प जिक्र चैप्लिन ने अपनी आत्मकथा में किया है; नेहरू और इंदिरा गांधी के साथ प्रवास का भी। गांधीजी का जिस घड़ी का यह फोटो है, उस वक्त चैप्लिन ऊपर खिड़की से यह दृश्य देख रहे थे, क्योंकि वे कुछ पहले (या शायद अंगरेजी कायदे के मुताबिक ठीक वक्त पर) पहुँच चुके थे। चैप्लिन के अपने शब्दों में: "अंततः जब वे (गांधी) पहुंचे और अपने पहनावे की तहें संभालते हुए टेक्सी से उतरे तो स्वागत में भारी जयकारे गूँज उठे। उस छोटी तंग गरीब बस्ती (स्लम) में क्या अजब दृश्य था जब एक बाहरी शख्स एक छोटे-से घर में जन-समुदाय के जय-घोष के बीच दाखिल हो रहा था।"

डॉ. कतियाल की बैठक में चैप्लिन को घेर बैठी एक युवती को एक दबंग महिला (संभवतः सरोजिनी नायडू) ने डपट कर चुप कराया, "क्या अब आप इनको गांधीजी से बात करने देंगी?" कमरे में 'सन्नाटा' छा गया। गांधीजी चैप्लिन की ओर देख रहे थे। चैप्लिन लिखते हैं कि गांधीजी से तो मैं उम्मीद नहीं कर सकता था कि वे मेरी किसी फिल्म पर बात शुरू करेंगे और कहेंगे कि बड़ा मजा आया; "मुझे नहीं लगता था कि उन्होंने कभी कोई फिल्म देखी भी होगी।" सो चैप्लिन



ने अपना "गला साफ किया" और कहा कि मैं स्वाधीनता के लिए भारत के संघर्ष के साथ हूँ; पर आप मशीनों के खिलाफ क्यों हैं, उनसे तो दासता से मुक्ति मिलती है, काम जल्दी होता है और मनुष्य सुखी रहता है?

गांधीजी ने मुस्कराते हुए शांत स्वर में उन्हें अहिंसा से लेकर आजादी के संघर्ष का सार पेश कर दिया। गांधीजी ने कहा - आप ठीक कहते हैं; मगर हमें पहले अंगरेजी राज से मुक्ति चाहिए। मशीनों ने हमें अंगरेजों का और गुलाम बनाया है। इसलिए हम स्वदेशी और स्व-राज की बात करते हैं। हमें अपनी जीवन-शैली बचानी है। हमारी आबोहवा ही आपसे बिल्कुल जुदा है। ठंडे मुल्क में आपको अलग किस्म के उद्योग और अर्थव्यवस्था की जरूरत है: खाना खाने के लिए आपको छुरी-कांटे आदि उपकरणों की जरूरत पड़ती है, सो आपने इसका उद्योग खड़ा कर लिया, पर हमारा काम तो उँगलियों से चल जाता है। हमें अनावश्यक चीजों से भी आजादी दरकार है।

चर्चा में चैप्लिन आजादी को लेकर गांधीजी की अनूठी दलीलों, उनके विवेक, कानून की समझ, राजनीतिक दृष्टि, यथार्थवादी नजरिए और अटल संकल्पशक्ति से अभिभूत हो गए। पर तब हैरान रह गए जब गांधीजी ने अचानक कहा कि माफ कीजिए, हमारी प्रार्थना का वक्त हो गया। उन्होंने चैप्लिन को विनय से कहा, आप चाहें तो यहाँ रुक सकते हैं। चैप्लिन ने सोफे पर बैठे-बैठे देखा: गांधीजी और पाँच अन्य भारतीय जन जमीन पर पालथी मार कर बैठ गए और रघुपतिराघव राजा-राम, पतित-पावन सीता-राम; वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे गाने लगे।

चैप्लिन को इसमें अजीब "विरोधाभास" अनुभव हुआ। उन्हें लगा कि महात्मा में उन्होंने जो "राजनीतिक यथार्थ की विलक्षण सूझ" देखी, वह इस समूह-गान में मानो तिरोहित हो गई। मगर क्या सचमुच? शायद यही तो वह सांस्कृतिक भेद था जिसे क्या चैप्लिन क्या अंगरेज, गांधीजी अंत तक हम भारतवासियों तक को समझाते रहे!

जुबानी तीर

“



अंकुश लगाया जाए।

यह बेहद शर्मनाक और निंदनीय है कि राजधानी दिल्ली जैसे शहर में शिक्षा संस्थान में पढ़ने वाली बेटियों के साथ इस तरह का व्यवहार हुआ। धर्म की आड़ में अपराध करने वाले लोगों पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। हम मांग करते हैं कि पुलिस जांच को तेजी से आगे बढ़ाए और पीड़ित छात्राओं को सुरक्षा और न्याय दिलाए। सरकार की जिम्मेदारी है कि ऐसे मामलों में पीड़ितों की आवाज दबाने की हर कोशिश पर

अलका लांबा (कांग्रेस प्रवक्ता)

“



किसी भी हाल में बेटियों के साथ अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अगर कोई बाबा या धर्मगुरु के नाम पर छात्राओं का शोषण करता है, तो वह समाज के लिए कलंक है। दिल्ली पुलिस को इस मामले में पूरी स्वतंत्रता है और दोषियों को कानून के तहत कठोर सजा मिलेगी। हमारी सरकार बेटियों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

मनोज तिवारी (भाजपा सांसद)

“



यह घटना साफ दिखाती है कि कुछ लोग धर्म और शिक्षा की आड़ में किस तरह अपराध को अंजाम दे रहे हैं। यह कानून-व्यवस्था का भी बड़ा सवाल है। दिल्ली पुलिस केंद्र सरकार के अधीन है, इसलिए हम मांग करते हैं कि जांच पूरी पारदर्शिता से हो और पीड़ित छात्राओं को इंसाफ मिले। आम आदमी पार्टी छात्राओं के साथ खड़ी है और हर स्तर पर उनकी मदद करेगी।

सौरभ भारद्वाज (आप नेता)

महिलाओं के लिए प्राकृतिक उपाय

मासिक धर्म के दौरान योग और प्राणायाम की ताकत

@ डॉ महिमा मक्कर

महिलाओं के जीवन में मासिक धर्म यानी पीरियड्स एक स्वाभाविक और जरूरी प्रक्रिया है। यह केवल शारीरिक बदलाव ही नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्थिति से भी जुड़ा हुआ समय होता है। कई महिलाओं के लिए यह अवधि असहजता, दर्द और थकान लेकर आती है। आधुनिक समय में दवाइयों और पेनकिलर्स का सहारा लिया जाता है, लेकिन आयुर्वेद मानता है कि शरीर को प्राकृतिक तरीके से संतुलित रखकर इन परेशानियों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसमें सबसे अहम भूमिका निभाती है, सही जीवनशैली, आहार और आयुर्वेदिक एक्सरसाइज।

आइए जानते हैं कि पीरियड्स के दौरान कौन-सी एक्सरसाइज और योगासन महिलाओं के लिए लाभकारी माने गए हैं।

आयुर्वेद का दृष्टिकोण: 'वात दोष' और पीरियड्स

आयुर्वेद के अनुसार मासिक धर्म का सीधा संबंध वात दोष से होता है। जब शरीर में वात असंतुलित हो जाता है तो पीरियड्स के दौरान दर्द, ऐंठन, कब्ज, सिरदर्द और चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएँ बढ़ जाती हैं। इसलिए इस दौरान ऐसी एक्सरसाइज करनी चाहिए जो वात को शांत करें, पेट की मांसपेशियों को आराम दें और मन को भी स्थिर करें।

हल्की-फुल्की एक्सरसाइज क्यों जरूरी है?

खून के प्रवाह को सुचारु बनाने के लिए।
हार्मोनल असंतुलन कम करने के लिए।
मूड स्विंग्स और तनाव से राहत पाने के लिए।
पाचन और नींद को बेहतर करने के लिए।
भारी जिम वर्कआउट या दौड़-भाग इस दौरान हानिकारक माने जाते हैं। इसकी बजाय सौम्य और धीमी एक्सरसाइज करनी चाहिए।

पीरियड्स में सुझाई जाने वाली आयुर्वेदिक एक्सरसाइज

1. तितली आसन (Butterfly Pose)

कैसे करें: फर्श पर बैठें, दोनों पैरों को मोड़कर पंजे आपस में मिलाएं और धीरे-धीरे घुटनों को ऊपर-नीचे करें।

लाभ: श्रोणि क्षेत्र में रक्त प्रवाह बढ़ाता है, पेट की ऐंठन को कम करता है और पीरियड्स की अनियमितता में भी मदद करता है।

2. बालासन

कैसे करें: घुटनों के बल बैठें, एड़ियों पर बैठते हुए शरीर को आगे झुकाकर माथा जमीन पर टिकाएं और हाथ आगे फैलाएं।

लाभ: पीठ और पेट की मांसपेशियों को आराम देता है, मानसिक शांति प्रदान करता है और नींद बेहतर करता है।



3. मकरासन

कैसे करें: पेट के बल लेटें, दोनों हाथों को सिर के नीचे रखें और पूरी तरह रिलैक्स करें।

लाभ: रीढ़ की हड्डी और पेट के निचले हिस्से में दबाव कम होता है। इससे पीरियड्स का दर्द घटता है और शरीर को गहरी शांति मिलती है।

4. सुप्त बद्ध कोणासन

कैसे करें: पीठ के बल लेटें, घुटनों को मोड़ें और पैरों के तलवे आपस में जोड़ लें। हाथों को रिलैक्स्ड पोजिशन में रखें।

लाभ: पेट और श्रोणि क्षेत्र की नसों को आराम देता है, ब्लड फ्लो बढ़ाता है और तनाव को कम करता है।

5. अनुलोम-विलोम प्राणायाम

कैसे करें: आराम से बैठें और बारी-बारी से नाक के छिद्रों से सांस अंदर-बाहर लें।

लाभ: हार्मोनल संतुलन बनाता है, मूड स्विंग्स कम करता है और मानसिक शांति देता है।

6. क्षमरी प्राणायाम

कैसे करें: आंखें बंद करके गहरी सांस लें और छोड़ते

समय मधुमक्खी की तरह 'भ्रूर' की ध्वनि करें।

लाभ: तनाव और चिंता घटाता है, सिरदर्द और चिड़चिड़ापन कम करता है।

7. हल्की वॉकिंग

कैसे करें: सुबह-शाम 10-15 मिनट की धीमी चाल से टहलें।

लाभ: शरीर में ऊर्जा बनी रहती है, ब्लोटिंग कम होती है और पाचन सुधरता है।

किन एक्सरसाइज से बचें?

भारी वजन उठाना

हाई-इंटेंसिटी वर्कआउट (जैसे स्प्रिंटिंग, जंपिंग, क्रॉसफिट)

लंबे समय तक उल्टे आसन (इनवर्जन योग) ये सब शरीर पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं और रक्त प्रवाह में बाधा डाल सकते हैं।

आयुर्वेदिक टिप्स पीरियड्स के दौरान

आहार

गरम, हल्का और सुपाच्य भोजन करें।

अदरक की चाय, सौंफ का पानी, और हल्दी वाला दूध फायदेमंद है।

तैलीय, मसालेदार और जंक फूड से बचें।

जीवनशैली

पर्याप्त नींद लें।

तनाव कम करने के लिए ध्यान करें।

शरीर को ठंड से बचाकर रखें।

घरेलू उपाय

पेट पर गुनगुने पानी की सिकाई करें।

हर्बल ऑयल से हल्की पेट की मालिश करें।

मानसिक संतुलन भी उतना ही जरूरी

आयुर्वेद कहता है कि मन और शरीर एक-दूसरे का प्रतिबिंब हैं। पीरियड्स के दौरान ध्यान, प्राणायाम और रिलैक्सेशन तकनीकें मानसिक शांति देती हैं। कई बार तनाव ही दर्द और असहजता को बढ़ा देता है। इसलिए इस अवधि में खुद के प्रति दयालु और सहज बने रहना बहुत जरूरी है।

पीरियड्स कोई बीमारी नहीं बल्कि प्रकृति का एक चक्र है। इसे दबाने या छुपाने के बजाय महिलाओं को इसे सहज रूप से स्वीकार करना चाहिए। आयुर्वेदिक एक्सरसाइज और योग न केवल दर्द और असहजता को कम करते हैं बल्कि महिलाओं के संपूर्ण स्वास्थ्य को संतुलित भी करते हैं। हल्की-फुल्की कसरत, सही आहार और सकारात्मक सोच इस अवधि को आसान बना सकती है।

संत त्यागराज जी: राम भक्ति के नादब्रह्म

संतों की महिमा अनंत और अलौकिक होती है। उनकी कृपा परमात्मा की भक्ति से भी बड़ी मानी जाती है। संत देश, काल और संप्रदाय से ऊपर होते हैं। वे सत्य, शांति और आनंद बांटकर सभी का भला करते हैं। जिस धरती पर संतों की लीला बहती है, वह पवित्र हो जाती है। भारतीय इतिहास में मध्यकाल में कबीर, नानक, रैदास, तुलसीदास, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, बसवेश्वर जैसे संतों ने सनातन परंपरा को अटूट रखा। इससे हिमालय का वैभव बढ़ा, गंगा की शांति गहरी हुई, विंध्याचल की शक्ति में भक्ति का बल आया। गोदावरी, कृष्णा और कावेरी के तटों पर पुण्य तीर्थ बने। रामेश्वर में महासागर का गौरव बढ़ा। पूरे देश ने राम और कृष्ण की भक्ति अपनाकर भागवत धर्म की पताका फहराई। दक्षिण भारत के तुलसीदास कहे जाने वाले संत त्यागराज ने कावेरी की पवित्र भूमि पर राम का यश-गान किया। उन्होंने अनार्यता का नाश कर शुद्ध आर्यता का संदेश दिया। मध्यकाल को राममय करना उनकी ऐतिहासिकता और विशिष्टता है। उनकी भक्ति की चांदनी ने पाप-ताप से जलते जीवों को शीतल शांति दी। उनके कंठ से नारद की वीणा-सा मधुर स्वर गूँजा।

राम भक्ति की ज्योति: सांस्कृतिक एकता के प्रतीक

संत त्यागराज की राम भक्ति उत्तर और दक्षिण भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक है। उन्होंने राम के अनादि स्वरूप का बोध कराया। वे तुलसीदास के समान थे, मानो रामचरितमानस के रचयिता ने दक्षिण में अवतार लेकर रामकथा का माधुर्य फैलाया। उनकी वाणी राममयी, भक्तिमयी और अलौकिक थी। तुलसीदास की तरह उन्होंने कहा कि राम की शरण में ही सबका भला है। राम परम पुरुष और मंगलकारी हैं। त्यागराज की कविता उनकी भक्ति की मूर्ति थी। उन्होंने रावणरूपी भौतिकता पर आध्यात्मिकता और राम भक्ति की विजय पताका फहराई। असुर का अंत उनके यश-गान का श्रेय था। राम भक्ति में उन्होंने सच्चिदानंद का सौंदर्य देखा। वे राम-कथा और भक्ति की त्रिवेणी में विदेह हो गए। राम के परम भक्त होते हुए भी वे शास्त्रानुमोदित देवताओं की पूजा में विश्वास रखते थे।

संत त्यागराज ने भारतीय इतिहास के भक्ति पक्ष को गौरवशाली बनाया। उनकी भक्ति की धारा जीवों को राम के चरणों तक ले जाती थी। राम नाम उनकी सांसों में बसा था, जो जगत को आलोकित करता था। उनकी भक्ति सांसारिक बंधनों को तोड़कर आत्मा को परमात्मा से जोड़ती थी। वे उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाला पुल थे, जिस पर भक्त आज भी राम तक पहुंचते हैं। उनकी वाणी में राम का माधुर्य जीव को पापों से मुक्त करता है।

जन्म और प्रारंभिक जीवन: राम कृपा से भरा बचपन

दक्षिण भारत के चोल प्रदेश में कावेरी के तट पर तिरुवरूर नगर में भरद्वाज कुलभूषण, पंडित, तपस्वी, शास्त्रज्ञ और संगीतज्ञ रामब्रह्म रहते थे। उनकी पत्नी शांता ने संवत् 1816 में त्यागराज को जन्म दिया। रामब्रह्म की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। जप्पेश और त्यागराज का पालन-पोषण उनके लिए चुनौती था। उन्होंने पचनद क्षेत्र



में शरण ली और संगीत-शिक्षण से जीविका चलाई। फुर्सत में वे भगवद्भजन करते। उनकी ख्याति बढ़ी, और तंजोर नरेश ने उन्हें राज्य में बसने को प्रोत्साहित किया। रामब्रह्म ने राजाश्रय स्वीकार किया। त्यागराज को वेद-वेदांग की शिक्षा के लिए पाठशाला भेजा गया। वे आत्मा, जीव और ईश्वर के संबंधों में रुचि रखते थे। राम नाम सुनते ही प्रेमानंद में डूब जाते। उनकी ईश्वरभक्ति बढ़ती गई। रामब्रह्म ने उन्हें वीणा-वादन में पारंगत शांति वेंकटरमन अय्यर के सान्निध्य में सौंपा। त्यागराज ने गानविद्या में निपुणता हासिल की। तेलुगु और संस्कृत का उन्हें अच्छा ज्ञान था।

उनका बचपन राम भक्ति से भरा था। संगीत की शिक्षा ने उनकी भक्ति को गहरा किया। वीणा बजाते हुए वे राम का गुणगान करते, और उनके स्वर सुनने वालों को भक्ति में डुबो देते। कावेरी की पवित्र धारा उनके जीवन में राम भक्ति की गंगा बनी। उनका बाल्यकाल राम की कृपा से आलोकित था।

गृहस्थ जीवन और भक्ति: राम विवाह की रक्षा

त्यागराज का विवाह हुआ, पर उनका गृहस्थाश्रम राममय था। वे एकांत कमरे में राम की उपासना करते। घर के कामों में उनका मन नहीं लगता था। वे संसार से अनासक्त हो गए। पिता के देहांत पर भाइयों में बंटवारा हुआ। पिता की राम-मूर्ति त्यागराज को मिली। वे तप-साधना में लग गए। पत्नी के साथ दक्षिण कैलाश मंदिर जाते और रोज एक लाख अस्सी हजार रामनाम जपते। उनके जीवन में आनंद का सागर उमड़ा। उनके भाई ने राम मूर्ति नदी में फेंक दी। त्यागराज कई दिन भूखे रहे, उनकी आँखों से आंसुओं की धारा बही। प्रभु की

कृपा से मूर्ति नदी के तट पर आई। त्यागराज ने उसे अंक में भर लिया। नगरवासियों ने उनकी चरण-धूलि मस्तक पर चढ़ाई और शोभायात्रा निकाली। उन्हें भक्तराज की उपाधि दी। त्यागराज का विश्वास था कि राम की प्राप्ति हर अभाव को मिटा देती है। वे राम विग्रह के सामने सितार बजाकर स्वरचित पद गाते। उन्होंने बीस हजार पद लिखने का संकल्प लिया, जिसे गणेश ने पूरा होने का आशीर्वाद दिया। वे गलियों में राम का यश-गान करते और भीख से जीविका चलाते। राम विग्रह की रक्षा ने उनकी भक्ति को और मजबूत किया। वे जान गए कि राम उनके साथ हैं। यह कहानी भक्तों को सिखाती है कि सच्ची श्रद्धा से प्रभु सब संभाल लेते।

राजा और मोह का त्याग: भक्ति की जीत

तंजोर के महाराजा शरभोजी ने उन्हें धन देना चाहा, पर त्यागराज ने सभा में जाना तक अस्वीकार किया। उन्होंने कहा, “धक्कार है स्वर्ण को। मैं राम की मूर्ति बेचकर धनी हो सकता था, पर मेरा मन राम के सौंदर्य में रीझा है।” राजा ने उनके संगीत के लिए कर्मचारी भेजे, पर राजा को पीड़ा हुई। उन्होंने क्षमा मांगी। एक रात राजा छिपकर उनका संगीत सुनने आए। त्यागराज ने गाया, “हे मन, सुंदरराज मार्ग छोड़ गलियों में क्यों भटकता है?” राजा ने इसे अपने लिए समझा और क्षमा मांगी। त्यागराज ने उन्हें गीत सुनाए और भक्ति दी।

वे सन्यास और त्याग की मूर्ति थे। जन्म से उन्हें राम भक्ति सिद्ध थी। काचीपुर के एक सन्यासी, जो शायद नारद थे, ने उन्हें राम तारक मंत्र और स्वरार्णव ग्रंथ दिया। राम, सीता और लक्ष्मण ने उन्हें दर्शन दिए। उनकी जीवन-गाथा चमत्कारों से भरी है।

चमत्कार और भक्ति: राम की कृपा

त्यागराज के संगीत में माधुरी थी। त्रिवेंद्रम के राजकुमार स्वाति तिरुनाल उनके गीतों से प्रभावित हुए, पर त्यागराज राजसभा नहीं गए। उन्होंने कहा, “सद्भक्ति ही पदवी है।” राममंगलम के गायक गोविंद मरार से मिलकर उन्होंने ‘पंचरत्न’ गाए। तिरुपति मंदिर में परदा हटने से उन्हें भगवान के दर्शन हुए। एक स्त्री के रोने पर उन्होंने राम स्तवन से उसके मृत पति को जीवित किया। कोवूर में शिष्य सुंदरेश ने धन देना चाहा, पर त्यागराज ने ठुकराया। जंगल में डाकुओं से राम-लक्ष्मण ने उनकी रक्षा की। डाकू ने उनकी चरण-धूलि ली।

वे भगवती अंबिका के भी भक्त थे। एक बार उनकी पत्नी को अंबिका के दर्शन हुए। पत्नी के देहांत के बाद त्यागराज का वैराग्य गहरा गया। उन्होंने बेटी को ससुराल भेजकर भक्ति में लीन हो गए।

अंतिम यात्रा और रचनाएँ: अमर संदेश

88 साल की उम्र में राम ने दर्शन देकर कहा, “दस दिन बाद तुम मुक्त होगे।” त्यागराज ने सन्यास लिया। संवत् 1904, पौष कृष्ण पंचमी को कावेरी तट पर राम-नाम जपते हुए उनका देहांत हुआ। उनके सिर से तेज निकला। उनका समाधि-मंदिर कावेरी तट पर है।

वे नादब्रह्म थे। उनकी रचनाएँ—नौका-चरित, दिव्य नामावली, रागरत्नमालिका, भक्त विजय, प्रह्लाद चरित और गीत पंचरत्न—राम भक्ति की अमृतधारा हैं। ये रचनाएँ भक्तों को राम के करीब ले जाती हैं। त्यागराज की भक्ति हमें सिखाती है कि सब कुछ राम को समर्पित कर दो, तो प्रभु खुद आ जाते हैं।

नवरात्रि पर चमका सोना-चांदी

निवेशकों की पहली पसंद बना सुरक्षित धातु



@ आनंद मीणा

भारत में नवरात्रि जैसे शुभ पर्व पर जहां मंदिरों में भक्ति और आस्था का माहौल है, वहीं बाजारों में सोना और चांदी की चमक भी बढ़ गई है। वैश्विक आर्थिक हलचल, अमेरिकी डॉलर की कमजोरी और निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी के चलते सोने और चांदी की कीमतें लगातार रिकॉर्ड तोड़ रही हैं। पिछले कुछ महीनों में सोने की कीमतों में करीब 50 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई है, जिसने इसे शेयर, इक्विटी और रियल एस्टेट जैसे निवेश विकल्पों से कहीं आगे खड़ा कर दिया है।

क्यों बढ़ रहे हैं दाम?

सोने-चांदी की कीमतें कई कारकों से तय होती हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में यह अमेरिकी डॉलर में ट्रेड होता है। डॉलर मजबूत हो तो कीमतें गिरती हैं, जबकि डॉलर कमजोर हो तो सोने की कीमतें चढ़ जाती हैं। हाल के दिनों में अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ओर से ब्याज दरों में कटौती की संभावना ने डॉलर को कमजोर किया है, और इसका सीधा असर सोने पर पड़ा है। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी की आशंका, यूरोप और मध्य-पूर्व में जारी तनाव और युद्ध जैसी स्थितियों ने भी निवेशकों को सोने की ओर मोड़ा है। जब भी बाजार अस्थिर होता है, सोना एक “सेफ हेवन एसेट” (सुरक्षित निवेश विकल्प) बन जाता है।

1,06,700 से 1,06,850 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच

ब्रोकरेज फर्म पीएल कैपिटल के संदीप राईचुरा के मुताबिक, “अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की वर्तमान कीमत



लगभग 3,800 डॉलर प्रति औंस है। आने वाले महीनों में इसमें करीब 26 प्रतिशत और उछाल देखने को मिल सकता है, जिससे यह 4,800 डॉलर प्रति औंस तक पहुंच सकता है। “इसका सीधा असर भारत के बाजार पर भी पड़ रहा है। दिल्ली, मुंबई, पुणे, चेन्नई, हैदराबाद और कोलकाता जैसे बड़े शहरों में 24 कैरेट सोना अब 1,16,400 से 1,16,550 रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच चुका है। वहीं 22 कैरेट सोने की कीमतें भी 1,06,700 से 1,06,850 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच दर्ज की गई हैं।

त्योहारी सीजन में सोने का महत्व

भारत में सोना केवल एक निवेश नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपरा का हिस्सा है। शादी-ब्याह, गृहप्रवेश या फिर नवरात्रि-दीवाली जैसे त्योहारों पर सोना खरीदना शुभ माना जाता है। नवरात्रि के दौरान सोने की मांग में अचानक बढ़ोतरी देखी जाती है। इस बार भी लोग नवरात्रि पर

खरीदारी के लिए दुकानों की ओर रुख कर रहे हैं, जिससे दाम और भी चढ़ सकते हैं। गोल्ड ज्वेलर्स एसोसिएशन के एक पदाधिकारी बताते हैं, “हर साल नवरात्रि और दीवाली पर सोने की बिक्री सालभर के मुकाबले कहीं अधिक होती है। इस बार भाव ऊंचे हैं, लेकिन फिर भी ग्राहकों की दिलचस्पी कम नहीं हुई है।”

कैसे तय होते हैं सोने के दाम?

भारत में सोने का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा आयात किया जाता है। इसलिए इसके दाम पर कई बातें असर डालती हैं। डॉलर-रुपया विनिमय दर, रुपया कमजोर होगा तो सोना महंगा होगा। इम्पोर्ट ड्यूटी और टैक्स, सीमा शुल्क, GST और अन्य स्थानीय कर सीधे कीमत पर असर डालते हैं। वैश्विक घटनाक्रम, युद्ध, मंदी, महंगाई या ब्याज दरों में बदलाव जैसी परिस्थितियाँ सोने को सुरक्षित विकल्प बना देती हैं। मांग और आपूर्ति—भारत

में शादी और त्योहारों के दौरान मांग बढ़ती है, जिससे दाम उछल जाते हैं।

निवेश का सबसे भरोसेमंद विकल्प

सोना लंबे समय से महंगाई और आर्थिक अस्थिरता के खिलाफ सुरक्षा कवच साबित हुआ है। जब शेयर बाजार में गिरावट आती है या रियल एस्टेट में मंदी रहती है, तब सोने में निवेशकों को बेहतर रिटर्न मिलता है। यही वजह है कि लोग इसे हमेशा पोर्टफोलियो का अहम हिस्सा मानते हैं। पिछले कुछ महीनों की बात करें तो सोने ने निवेशकों को इक्विटी और रियल एस्टेट के मुकाबले कहीं ज्यादा लाभ दिया है। यही कारण है कि छोटे निवेशक से लेकर बड़े संस्थागत निवेशक तक, सभी गोल्ड में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहे हैं।

चांदी की चमक भी बरकरार

सिर्फ सोना ही नहीं, बल्कि चांदी की कीमतें भी तेजी से बढ़ रही हैं। औद्योगिक उपयोग और निवेशक मांग के कारण चांदी की कीमत में उछाल जारी है। आने वाले दिनों में इसमें और भी तेजी देखने को मिल सकती है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अगर आप सोने को निवेश के तौर पर खरीदना चाहते हैं, तो ज्वेलरी की बजाय गोल्ड बार, कॉइन या डिजिटल गोल्ड चुनें। इनमें मेकिंग चार्ज और डेड वेल्यू का नुकसान कम होता है। वहीं त्योहारों और शादी-ब्याह के लिए सोने की खरीदारी परंपरा का हिस्सा है, इसलिए उसमें भाव की परवाह कम की जाती है। वैश्विक बाजार में जारी अस्थिरता और डॉलर की कमजोरी को देखते हुए विशेषज्ञ मानते हैं कि आने वाले महीनों में सोने-चांदी के दाम और ऊंचे स्तर पर जा सकते हैं। निवेशक इसे महंगाई से बचाव का सबसे बेहतर विकल्प मान रहे हैं।

भगवान

ने कहा मेरे भिन्न प्रकार के भक्त



इस संसार में दुख, पीड़ा और समस्याएं व्याप्त हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कई दुखी प्राणी अपने दुखों से मुक्त होने के लिए मेरी भक्ति करते हैं वे आर्त की श्रेणी में आते हैं। वे मेरे समूह रूप की भक्ति करते हैं। कुछ आर्थिक रूप से दुखी प्राणी धनार्जन के लिए और अपनी समस्याओं के निवारण के लिए त मेरी भक्ति करते हैं, वे अर्थार्थी कहलाते हैं। कुछ प्राणी जिज्ञासाओं से घिरे रहते हैं और उनकी पूर्ति के लिए और जानने के लिए मेरी भक्ति करते हैं। लेकिन एक श्रेणी ऐसी भी है कि जो ज्ञानी कहलाती है। इस श्रेणी में आने वाले भक्त मेरे निर्गुण और सगुण दोनों स्वरूपों का ज्ञान रखते हैं और वे मेरी निस्वार्थ भक्ति करते हैं। ऐसे भक्त ही श्रेष्ठ होते हैं। यदि कोई अपनी समस्याओं को हल करने के लिए और भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति के लिए भगवान की भक्ति करता है तो उसे मोक्ष कभी प्राप्त नहीं हो सकता। उसे यश-कीर्ति, धन-संपदा, संतान सुख, पद प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाएगी लेकिन वह मोक्ष का अधिकारी कभी नहीं बन सकता।

पाठ से होता है तन, मन, धन की समस्याओं का निवारण

मेरा जन्म राजस्थान में हुआ है। मैं चाहता हूँ कि मेरी इस मातृभूमि

में कोई भी व्यक्ति तन, मन और धन की समस्याओं से पीड़ित न हो। मैं बहुत गरीबी और दुखों में रहा हूँ। मनुष्य का यदि तन ठीक न हो तो धन का अर्जन नहीं हो सकता। यदि धन नहीं है तो तन का कोई लाभ नहीं है। तन ठीक न हो और मन भी ठीक न हो तो धन का भी कोई उपयोग नहीं हो सकता। अस्तु तन, मन और धन तीनों का ठीक होना बहुत जरूरी है। इसके साथ-साथ यदि तत्वों का भी ज्ञान हो जाए तो पूर्णता आ जाती है। ज्ञान के आने के बाद अंधेरा हट जाता है। जैसे सूर्य के आते ही अंधेरा भाग जाता है।

मां दुर्गा का बीज मंत्र ही मां दुर्गा हैं

मंत्र का अर्थ है-मन से पार, निरंकार और परमात्मा जो एक ओंकार है। मां दुर्गा कहती हैं कि मैं सतनाम, कर्ता पुरख, निरमोह, निरवैर हूँ। मैं ब्रह्म हूँ। जब हम मां दुर्गा के बीज मंत्र का पाठ करते हैं तो मां की अभूति को प्राप्त करते हैं। इसलिए मां दुर्गा और इसका बीज मंत्र एक ही चीज हैं, अलग-अलग नहीं। हम उत्कील मंत्र द्वारा यदि पाठ करते हैं तो निश्चित रूप से कल्याण को प्राप्त होते हैं।



समागम में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बहनों के यूटीआई रोग की जांच की गई तथा निशुल्क औषधि का वितरण भी किया गया। प्रस्तुत है कुछ बहनों के अनुभव-

गुरदासपुर की श्रीमती **वंदना जी** ने बताया कि मुझे मैसुरेशन पीरियड की इतनी हाई ब्लीडिंग थी कि मैं बहुत परेशान रहती थी। मैंने गुरदासपुर के महक हास्पिटल तथा पठानकोट को श्रीराम हास्पिटल में इलाज करवाया। इन्होंने जो दवा दी उससे फास्ट हार्मोन्स की प्राब्लम खड़ी हो गई। मुझे 15-15 दिन में ब्लीडिंग होती थी इसलिए मेरा खून 6 ग्राम हो गया था। मैंने मिरेकल वंडर वाश का यूज किया तो अब यह 10 ग्राम हो गया है।

कुमारी अवनी ने बताया कि मेरी बेस्ट में मिल्क जैसे स्प्रे होने लगे थे। जिसकी वजह से मुझे टेशन हो गई थी। मेरे पेट के नीचे वाले स्थान पर टाइटेनेस हो गई थी जिसके कारण उल्टी भी आती थी। मैंने मिरेकल वंडर वाश का प्रयोग किया और दो महीने के बाद मैं अपनी समस्या से मुक्त हो गई हूँ।

एक बहन ने बताया कि मैंने 2011 में एंजियोग्राफी करवाई थी। तब से ही मुझे व्हाइट डिस्चार्ज की प्राब्लम बनी हुई थी। मुझसे खाना भी नहीं खाया जाता था, मेरा मन खराब रहता था। जब मैंने मिरेकल वंडर वाश का प्रयोग किया तो मेरी यह समस्या बिल्कुल खत्म हो गई।

एक बहन ने बताया कि मुझे पेशाब की बहुत भारी समस्या रहती थी। साथ ही मुझे खांसी भी रहती थी। जब मैं खांसती थी तो पेशाब निकल जाता था और कपड़े खराब हो जाते थे। इंचिंग की समस्या भी बनी रहती थी। मैंने इससे बहुत परेशान थी। मैंने मिरेकल वंडर वाश का प्रयोग किया तो मेरी यह समस्या समाप्त हो गई।

एक बहन ने बताया कि मेरी योनि में बहुत जलन होती



थी। यह समस्या कई सालों से बनी हुई थी। मेरी कमर में और सिर में भी दर्द रहता था। मैंने कैप में जांच करवाई और मैंने मिरेकल वंडर वाश का ट्रीटमेंट लिया। मैं कुछ सेकंडों में ही ठीक हो गई।

एक बहन ने बताया कि मैं बहुत सालों से पथरी की समस्या से परेशान थी। मुझे लीवर की समस्या हो गई थी साथ ही यूरिन में इन्फेक्शन हो गया था। मैंने आज कैप में जांच करवाई और मिरेकल वंडर वाश का ट्रीटमेंट लिया तो मुझे थोड़ी ही देर में बहुत आराम मिला है।

एक बहन ने बताया कि जब मैं दस साल की थी तब

ही हार्मोन्स इंबैलेंस हो गया था। तब से हो मुझे कुछ न कुछ समस्या बनी रहती है। अभी कुछ समय से मेरे पेट में बहुत दर्द रहने लगा था और यूरिन में इंचिंग भी बहुत होती थी। मैंने मिरेकल वंडर वाश का प्रयोग किया तो कुछ सेकंडों में ही आराम आ गया।

एक बहन ने बताया कि मुझे इंचिंग की समस्या थी। इसके कारण मुझे बहुत परेशानी होती थी। मैं कई बार बदरिस्त भी नहीं कर पाती थी और बेचैन हो जाती थी। मैंने समागम में लगे कैप में जांच करवाई और मिरेकल वंडर वाश यूज किया। अब मैं नार्मल हूँ और इंचिंग खत्म हो गई।

दिवाली से क्रिसमस तक बॉक्स ऑफिस पर चार तूफान चार फिल्मों की टक्कर- शाहरुख-सलमान से खाली रहा मैदान



@ शोभित यादव

बॉलीवुड और हॉलीवुड दोनों ही इस साल के आखिरी तीन महीनों को लेकर पूरी तरह तैयार हैं। अक्टूबर से दिसंबर के बीच ऐसा फिल्मी सैलाब आने वाला है, जिसने पहले से ही सिनेमाप्रेमियों का रोमांच बढ़ा दिया है। लेकिन मजेदार बात ये है कि इस बार बॉलीवुड के तीन बड़े नाम, शाहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान—फेस्टिव सीजन में पूरी तरह नदारद रहेंगे। उनकी जगह नई पीढ़ी के सितारे और कुछ हॉलीवुड दिग्गज दर्शकों को लुभाने वाले हैं। 2025 का बॉक्स ऑफिस पहले ही कई उतार-चढ़ाव देख चुका है। कई स्मॉल बजट फिल्मों ने रिकॉर्ड तोड़े, वहीं कई मेगा बजट मूवीज उम्मीदों पर खरी नहीं उतर पाईं। अब साल का अंतिम क्वार्टर इंडस्ट्री के लिए निर्णायक साबित हो सकता है।

दिवाली पर हंसी और डर का संगम

रश्मिका मंदाना और आयुष्मान खुराना की जोड़ी पहली बार बड़े पर्दे पर नजर आएगी, वो भी हॉरर-कॉमेडी 'थामा' के जरिए। फिल्म का ट्रेलर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। दर्शक इसे मैडॉक यूनिवर्स की अगली बड़ी फिल्म मान रहे हैं। आयुष्मान, जो अपने अनोखे रोल्स के लिए जाने जाते हैं, इस बार अलौकिक डर और कॉमिक टाइमिंग का मजेदार मिश्रण लेकर

आएंगे। साथ ही नवाजुद्दीन सिद्दीकी, परेश रावल और संजय दत्त जैसे मंझे हुए कलाकार फिल्म में गहराई और मज्जा दोनों बढ़ाने वाले हैं। फेस्टिव सीजन पर रिलीज होने का फायदा इसे निश्चित तौर पर मिलेगा। दिवाली के समय परिवारों के साथ देखने योग्य कॉमेडी-हॉरर मूवीज हमेशा अच्छा बिजनेस करती हैं।

धुरंधर: रणवीर सिंह का नया रूप

क्रिसमस से ठीक पहले रणवीर सिंह की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'धुरंधर' सिनेमाघरों में दस्तक देगी। फिल्म एक गैंगस्टर ड्रामा है, जिसे डायरेक्टर आदित्य धर ने गढ़ा है। खास बात यह है कि रणवीर इसमें अपनी उम्र से 20 साल छोटी एक्ट्रेस सारा अर्जुन के साथ रोमांस करते नजर आएंगे। संजय दत्त का दमदार रोल इसमें और मसाला डालने वाला है। फिल्म का टीजर पहले ही दर्शकों को इंटेंस लुक और जबरदस्त डायलॉग्स से हैरान कर चुका है। क्रिसमस सीजन हमेशा बॉक्स ऑफिस के लिए हॉटस्पॉट रहा है और 'धुरंधर' इस बार उस खाली जगह को भर सकती है, जो आमतौर पर शाहरुख या आमिर खान की फिल्मों से पूरी होती थी।

अवतार: फायर एंड ऐश — हॉलीवुड का सबसे बड़ा दांव

जेम्स कैमरून की 'अवतार' सीरीज ने हमेशा ही दुनियाभर में रिकॉर्ड तोड़े हैं। 'अवतार: फायर एंड ऐश'

इस बार नया ट्विस्ट लेकर आ रही है। इस बार कहानी में खलनायिका वरांग की एंट्री होगी, जिसे ऊना चैपलिन ने निभाया है। प्रीक्वल की जबरदस्त सफलता के बाद अब दर्शकों को विजुअल ट्रीट और बड़े पैमाने पर एक्शन की उम्मीद है। 119 दिसंबर को दुनियाभर में रिलीज होने जा रही यह फिल्म भारत में भी भारी बिजनेस कर सकती है। पिछले कुछ सालों में हॉलीवुड की बड़ी फिल्मों ने भारत में अपना मजबूत बाजार बनाया है। मार्वल और अवतार जैसी फ्रेंचाइजी यहां करोड़ों का कलेक्शन कर चुकी हैं। दिवाली-क्रिसमस के बीच रिलीज होने वाली यह फिल्म इंडियन बॉक्स ऑफिस को ग्लोबल लेवल पर जोड़ने वाली है।

अल्फा: वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स में फीमेल पावर

क्रिसमस के मौके पर आलिया भट्ट और शरवरी वाघ 'अल्फा' के जरिए सिल्वर स्क्रीन पर आग लगाने वाली हैं। 'व्यशराज फिल्मस' के स्पाई यूनिवर्स की यह पहली फीमेल-लीड फिल्म होगी। आलिया और शरवरी दोनों का एक्शन अवतार दर्शकों के लिए सबसे बड़ा सरप्राइज है। रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म में बॉबी देओल को मुख्य खलनायक के रूप में देखा जाएगा। वाईआरएफ की स्पाई सीरीज पहले ही पठान, टाइगर और वॉर जैसी फिल्मों से हिट साबित हो चुकी है। अब महिला प्रधान इस कहानी से बैनर को और मजबूती मिलने की उम्मीद है।

तीन खानों की अनुपस्थिति, नई पीढ़ी की मौजूदगी

बॉक्स ऑफिस पर दशकों से दबदबा बनाए रखने वाले शाहरुख, सलमान और आमिर खान इस बार किसी भी फेस्टिव स्लॉट पर नजर नहीं आएंगे। यह इंडस्ट्री के लिए बड़ा बदलाव है, क्योंकि आमतौर पर दिवाली और क्रिसमस जैसी तारीखें इन्हीं सितारों के नाम होती थीं। उनकी जगह रणवीर सिंह, आलिया भट्ट, आयुष्मान खुराना और रश्मिका मंदाना जैसे कलाकार आगे बढ़ते दिख रहे हैं। यह इशारा है कि बॉलीवुड धीरे-धीरे अपने नाए 'फेस ऑफ द फ्यूचर' तय कर रहा है।

बॉक्स ऑफिस पर क्या होगा असर?

अक्टूबर से दिसंबर तक लगातार बड़ी फिल्मों के रिलीज होने से थिएटर्स में भीड़ बनी रहेगी। हॉरर-कॉमेडी और फैमिली एंटरटेनमेंट वाली फिल्में छोटे शहरों में ज्यादा चलेगी, जबकि 'अवतार' और 'अल्फा' जैसे हाई-टेक विजुअल्स वाले प्रोजेक्ट्स मल्टीप्लेक्स में धूम मचाएंगे। हॉलीवुड की फिल्में अब सीधे भारतीय फिल्मों को चुनौती दे रही हैं। 'अवतार' इसका बड़ा उदाहरण है। अगर रणवीर, आलिया या आयुष्मान की फिल्में सुपरहिट हो जाती हैं, तो बॉलीवुड का स्टारडम समीकरण ही बदल सकता है। दिवाली से क्रिसमस तक का यह फेस्टिव सीजन इंडियन बॉक्स ऑफिस के लिए किसी 'लिटमस टेस्ट' से कम नहीं होगा।

ट्रेड वॉर, ट्रंप के टैरिफ और निवेशकों की नई चाल

वॉरेन बफेट भी झुके सोने-चांदी की तरफ



@ रिंकू विश्वकर्मा

वैश्विक शेयर बाजारों में मची हलचल, अमेरिका-चीन के बीच बढ़ते तनाव और डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ संबंधी विवादित फैसलों ने निवेशकों को असमंजस में डाल दिया है। दुनियाभर के निवेशक अब सुरक्षित ठिकानों की तलाश में हैं। ऐसे समय में निवेश के सबसे बड़े नामों में से एक, वॉरेन बफेट, का सोने और चांदी के प्रति बदला हुआ रुख सबको हैरान कर रहा है। यह वही बफेट हैं, जो कभी सोने को “गैर-उत्पादक संपत्ति” मानते थे और शेयरों को कहीं बेहतर विकल्प बताते थे। 1998 में तो उन्होंने कहा था कि “सोना बस भंडारण के लिए है, इससे कुछ पैदा नहीं होता।” लेकिन 2025 तक आते-आते हालात इस कदर बदल गए हैं कि बफेट की कंपनी बर्कशायर हैथवे ने भी गोल्ड और सिल्वर में रुचि दिखाना शुरू कर दिया है।

वैश्विक हालात ने बदली तस्वीर

अमेरिका और चीन के बीच चल रहे ट्रेड वॉर ने न सिर्फ कारोबारी रिश्तों को बिगाड़ा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी असर डाला है। ट्रंप के टैरिफ संबंधी निर्णयों ने दुनिया भर के शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव को तेज कर दिया। नतीजा यह हुआ कि निवेशक ऐसे विकल्पों की ओर लौटने लगे, जिन्हें “सेफ हेवन” माना

जाता है। यानी सोना और चांदी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस साल सोने और चांदी की कीमतों में 45-50% की जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इस उछाल ने सबसे परंपरागत निवेशक कहे जाने वाले वॉरेन बफेट को भी आकर्षित कर लिया।

बफेट का बदला रुख: बड़ा

विशेषज्ञ मानते हैं कि जब वॉरेन बफेट जैसे अनुभवी निवेशक किसी दिशा में कदम उठाते हैं, तो यह महज एक निवेश रणनीति नहीं बल्कि बाजार की दिशा का संकेत होता है। उनका सोना-चांदी की अहमियत स्वीकार करना इस बात का प्रतीक है कि आने वाले समय में शेयर और बॉन्ड बाजार गंभीर दबाव झेल सकते हैं।

रॉबर्ट कियोसाकी की चेतावनी

इसी बीच वित्तीय गुरु और बेस्टसेलिंग किताब ‘रिच डैड, पुअर डैड’ के लेखक रॉबर्ट कियोसाकी ने भी निवेशकों को सतर्क कर दिया है। कियोसाकी लंबे समय से सोना, चांदी और बिटकॉइन जैसे विकल्पों पर जोर देते रहे हैं। उनका तर्क है कि जब भी कागजी संपत्तियाँ—जैसे शेयर और बॉन्ड—धराशायी होती हैं, तब सोना-चांदी जैसे वास्तविक संसाधन ही बचाव का काम करते हैं। कियोसाकी ने सोशल मीडिया पर बफेट के बदले रुख पर कहा, “भले ही वॉरेन बफेट ने सालों तक

हम सोना-चांदी निवेशकों का मजाक उड़ाया हो, लेकिन उनका अचानक समर्थन करना इस बात का साफ संकेत है कि शेयर और बॉन्ड बाजार क्रैश की ओर बढ़ रहे हैं।” उनका यह भी मानना है कि आने वाला संकट 1929 की महामंदी से भी बड़ा हो सकता है।

गोल्ड-सिल्वर की चमक और बिटकॉइन का आकर्षण

2025 में सोना और चांदी की रफ्तार ने फिर साबित किया है कि ये धातुएं सदियों से सबसे भरोसेमंद सेफ हेवन एसेट्स रही हैं। सोना महंगाई और मंदी से बचाव का सबसे पुराना जरिया है, जबकि चांदी ने इस बार दोहरी भूमिका निभाई है। औद्योगिक मांग और निवेश, दोनों वजहों से इसमें तेजी आई है। इसी के साथ, बिटकॉइन और अन्य क्रिप्टोकॉइन्स ने भी निवेशकों का ध्यान खींचा है। कियोसाकी का कहना है कि “सोना और चांदी सदियों से भरोसेमंद हैं, लेकिन बिटकॉइन अपने डिजाइन और सीमित सप्लाय के कारण भविष्य में सबसे बड़ा खेल बदलने वाला निवेश हो सकता है।”

निवेशकों के लिए मायने क्या हैं?

बाजार विशेषज्ञ मानते हैं कि वॉरेन बफेट जैसे दिग्गज का सोने-चांदी की तरफ झुकाव और कियोसाकी की चेतावनी मिलकर एक बड़ा संदेश देते हैं। इसका मतलब

है कि शेयर और बॉन्ड पर दबाव बढ़ेगा – आने वाले महीनों में अस्थिरता और गिरावट दोनों देखने को मिल सकती है। गोल्ड-सिल्वर मजबूत रहेंगे निवेशकों को इसमें लंबी अवधि का सहारा मिलेगा। क्रिप्टो पर निगाहें, बिटकॉइन और एथेरियम जैसे डिजिटल एसेट्स भविष्य के लिए गंभीर विकल्प बन रहे हैं। पोर्टफोलियो रणनीति बदलेगी, अब निवेशक अपने पोर्टफोलियो का बड़ा हिस्सा ठोस संपत्तियों को देंगे।

सुरक्षित निवेश की ओर वापसी

इतिहास गवाह है कि जब भी दुनिया में आर्थिक या राजनीतिक संकट गहराता है, लोग सोने-चांदी की ओर लौटते हैं। चाहे वह 1970 का तेल संकट हो, 2008 की ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस हो या अब का ट्रेड वॉर—हर बार सोना निवेशकों का सबसे बड़ा सहारा साबित हुआ है। इस बार फर्क सिर्फ इतना है कि अब बिटकॉइन भी इस दौड़ में शामिल है। निवेशक इसे “डिजिटल गोल्ड” कहकर पहचान रहे हैं। अगर अमेरिकी-चीनी तनाव, ब्याज दरों में अस्थिरता और वैश्विक मंदी की आशंका जारी रहती है, तो सोने और चांदी की कीमतें और ऊपर जा सकती हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि सोना अभी भी मूल्य संरक्षण का सबसे भरोसेमंद विकल्प है, जबकि बिटकॉइन भविष्य का हाई-रिस्क, हाई-रिटर्न दांव बना रहेगा।

प्रशांत किशोर का हमला

अमित शाह और बीजेपी पर चुनावी वोट लेने की राजनीति का आरोप

@ आनंद मीणा

बिहार के राजनीतिक परिदृश्य में इस बार गर्मी बढ़ गई है। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने मंगलवार, 6 अगस्त को सीतामढ़ी के डुमरा फुटबॉल ग्राउंड में आयोजित बिहार बदलाव जनसभा में केंद्र और राज्य सरकार दोनों पर तीखा हमला बोला। प्रशांत किशोर ने इस मौके पर गृह मंत्री अमित शाह, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर आरोप लगाते हुए कहा कि ये नेता चुनाव के अलावा बिहार में एक रात भी नहीं बिताते। उन्होंने स्पष्ट किया कि चुनाव के समय ही ये नेता बिहार आते हैं और भाषण देकर वोट मांगने की कोशिश करते हैं, जबकि सामान्य समय में राज्य की समस्याओं की ओर इनकी कोई रुचि नहीं होती।

प्रशांत किशोर ने महाराष्ट्र में बीजेपी की सरकार के दौरान बिहार के युवाओं के साथ हुए हमलों का जिक्र करते हुए केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, “बिहार की जनता की ओर से मेरा अमित शाह से सवाल है कि महाराष्ट्र में बीजेपी की सरकार है और बिहार के युवाओं को वहां के लुपेन एलिमेंट्स ने मारा है। अमित शाह ने इसपर कोई बयान क्यों नहीं दिया? बिहार के बच्चे जब महाराष्ट्र में मारे गए तब आप मुंह नहीं खोल रहे थे, अब वोट लेने के लिए सीतामढ़ी में आकर भाषण देंगे। इसे कोई मानने वाला नहीं है।” इस बयान के माध्यम से प्रशांत किशोर ने स्पष्ट किया कि राजनीतिक नेता केवल चुनाव के समय ही बिहार में नजर आते हैं और जनता की वास्तविक समस्याओं को दरकिनार कर वोट बैंक की राजनीति करते हैं।

SIR (Special Summary Revision) मामले पर प्रशांत किशोर ने बीजेपी और चुनाव आयोग पर बड़ा हमला किया। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग बीजेपी के दबाव में गरीब, वंचित और मुस्लिम मतदाताओं के नाम काटने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने लोगों को आश्वस्त किया कि किसी को डरने की जरूरत नहीं है और सुप्रीम कोर्ट पहले ही कह चुका है कि अगर आपके पास आधार है तो आपको वोट देने का अधिकार है। उन्होंने साफ कहा कि चुनाव आयोग किसी की नागरिकता तय नहीं कर सकता और जिनका नाम कटेगा उनके लिए भी लड़ाई जारी रहेगी। उनका मानना है कि नाम कटने के बाद भी जितने लोग बचेंगे, वही बीजेपी को हराने के लिए पर्याप्त हैं।

डोमिसाइल नीति पर भी प्रशांत किशोर ने केंद्र और राज्य सरकार की आलोचना की। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार इस नीति का प्रचार जनता को गुमराह करने के लिए कर रही है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में केवल TRE-4 के लिए डोमिसाइल में बदलाव की घोषणा हुई है, जबकि इससे पहले 3 लाख शिक्षकों की बहाली हुई थी, जिसमें ज्यादातर बिहार के बाहर के लोग शामिल हो गए। उन्होंने आरोप लगाया कि 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री बनने की लालच में डोमिसाइल नीति को बदलकर बिहार के बच्चों



का हक छीना और दूसरे राज्यों के लोगों को रोजगार दिया। अब विधानसभा चुनाव के समय TRE-4 में डोमिसाइल बदलाव का दावा किया जा रहा है, लेकिन सरकार यह नहीं बता रही कि इसमें कितने प्रतिशत बिहार के लोग रहेंगे। प्रशांत किशोर ने जोर देकर कहा कि अगर डोमिसाइल लागू हो रहा है तो बिहार के सभी बच्चों को रोजगार मिलने चाहिए।

जनसभा में प्रशांत किशोर ने जनता को यह भी समझाने की कोशिश की कि जन सुराज के सिर्फ खड़े होने भर से ही सरकार डर रही है। उन्होंने कहा कि अगर बिहार में जन सुराज की सरकार बनती है, तो जनता के लिए क्या-क्या फायदे होंगे। उन्होंने यह भी जोड़ा कि सरकार की घोषणाओं का क्रेडिट कोई भी ले सकता है, लेकिन 20 साल से बिहार में कुछ नहीं हो रहा था और अब सरकार अपने आप में जनता के डर के कारण पेंशन बढ़ा रही है, मानदेय बढ़ा रही है और डोमिसाइल नीति बदल रही है।

प्रशांत किशोर ने अपने भाषण में केंद्र और राज्य सरकार की चुनावी राजनीति और वोट बैंक रणनीति पर भी कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि नेताओं की प्राथमिकता

हमेशा चुनाव जीतने की रही है और जनता की वास्तविक समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। उनका यह बयान बिहार के राजनीतिक समीकरणों को उजागर करता है, जहाँ मतदाता अब केवल घोषणाओं और भाषणों से संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि ठोस परिणाम और नीति सुधार की उम्मीद रखते हैं।

SIR मामले और डोमिसाइल नीति के अलावा, प्रशांत किशोर ने शिक्षा और युवाओं के मुद्दों पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि बिहार के बच्चों को अपने राज्य में रोजगार मिलने चाहिए और सरकारी नीतियां केवल चुनावी लाभ के लिए नहीं बननी चाहिए। उनकी यह बात राज्य की युवा आबादी के बीच विशेष ध्यान खींच रही है, जो लंबे समय से बेरोजगारी और शिक्षा के मुद्दों से जूझ रही है।

इस जनसभा में प्रशांत किशोर ने जनता को यह संदेश दिया कि जन सुराज सिर्फ एक राजनीतिक विकल्प नहीं, बल्कि बदलाव की दिशा में पहला कदम है। उन्होंने कहा कि जनता अपने अधिकारों और हक के लिए जागरूक हो रही है और यही वजह है कि सरकारों में डर का माहौल

पैदा हो गया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बिहार में अगर सही नीतियां लागू होती हैं, तो लोगों को पेंशन, मानदेय और रोजगार के मामले में स्थायी लाभ मिलेगा।

सामान्यतः यह सभा राजनीतिक और सामाजिक संदेशों का मिश्रण थी। प्रशांत किशोर ने स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी का लक्ष्य केवल चुनाव जीतना नहीं है, बल्कि बिहार के युवाओं, शिक्षित आबादी और गरीबों के अधिकारों की सुरक्षा करना है। उन्होंने चुनाव आयोग और सरकार की नीतियों पर कटाक्ष करते हुए यह दिखाया कि जनता के प्रति उनकी जवाबदेही और प्रतिबद्धता कितनी गहरी है।

कुल मिलाकर, सीतामढ़ी की यह जनसभा बिहार की राजनीति में बदलाव और जनता के अधिकारों पर जोर देने का प्रतीक रही। प्रशांत किशोर ने बीजेपी और राज्य सरकार पर चुनावी लाभ के लिए जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया और बताया कि SIR और डोमिसाइल नीति जैसे मामले केवल राजनीतिक फायदा लेने के लिए हैं। उन्होंने जनता को जागरूक रहने और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने का संदेश दिया।

देश गर्त में है

देश गर्त में गिर रहा है
उसके पहले घर गिरा गर्त में

फिर गिरा पड़ोस
फिर बारी समाज के गर्त में गिरने की थी

समाज गिरा भी
जितना गिर सकता था

फिर बारी आई देश के गर्त में गिरने की
उसके पहले नेता गिरे गर्त में

और गिरे-गिरे बयान देने लगे
अपना-अपना

हम घर बचाने की जुगत में जुटे अपना-
अपना,
पर अब मुश्किल था, घर सहित

देश को बचा पाना
बहुत देर हो चुकी है

ऐसे में कुछ भी गर्त में गिरे बिना नहीं रह
सकता था
सो सब को

गिरते देखा :
सब घर के लोगों ने पड़ोस ने

समाज ने फिर देश ने भी
अब बाकी था तो

मन बहलाव के लिए
देश बचाने का खेल

जनता के लिए,
क्योंकि जनता ख़ुश रहना चाहती थी हर हाल
में

हम खेलने लगे खेल
कि शायद खेल खेल में बन जाए बात

जैसे खेल खेल कर फुसलाते हैं बच्चों को,
शायद देश भी बहल जाए

गर्त में गिरने से सँभल जाए
हमने खेला खेल

चिड़िया उड़,
पंतल उड़,

आतंकवाद उड़,
बेईमानी उड़,

नेता उड़,
झूठ उड़...

अगर खेल में यह सब नहीं हुआ तो
क्या हम खेलेंगे

घर उड़?
देश उड़?

होता सचमुच सब कुछ खेल जैसा
हम जिसे उड़ा पाते

उड़ जाता,
हम जिसे

बचा पाते बच जाता...
यही सोच हम बहुत सारे खेल

खेल रहे हैं :
तब से

अब तक
यह खेल चलेगा न जाने तक तक...

वोट चोरी का सवाल: लोकतंत्र पर सवालिया निशान

भारत की राजनीति में वोट चोरी का मुद्दा इन दिनों जोर-शोर से उठ रहा है। राहुल गांधी ने अपनी 'वोट चोरी अभियान' के जरिए चुनावी गड़बड़ियों पर सवाल खड़े किए हैं। बीबीसी की एक जांच ने इन दावों को बल दिया है, खासकर वोटर लिस्ट में हेराफेरी के बारे में। यह सब बिहार चुनाव से ठीक पहले हो रहा है, जहां विपक्ष पारदर्शिता की मांग कर रहा है। राहुल गांधी की दक्षिण अमेरिका यात्रा और वहां के बयानों ने इस बहस को और तेज कर दिया। राजनीतिक रूप से जागरूक लोग इस पर चर्चा कर रहे हैं। चुनावी ईमानदारी, ईवीएम की विश्वसनीयता और विपक्ष की भूमिका पर सवाल उठ रहे हैं। यह लेख इन पहलुओं को सरल तरीके से समझाने की कोशिश करता है। हम देखेंगे कि यह मुद्दा कैसे शुरू हुआ, बीबीसी ने क्या कहा, और इसका असर क्या पड़ सकता है।

पहला झटका: वोट चोरी अभियान की शुरुआत

राहुल गांधी ने अगस्त 2025 में 'वोट चोरी अभियान' की शुरुआत की। यह अभियान लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों पर सवाल उठाता है। उन्होंने कहा कि वोटर लिस्ट में नाम काटे गए और नकली नाम डाले गए। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल ने उदाहरण दिए। कर्नाटक के एक विधानसभा क्षेत्र में 1,00,250 वोट चोरी हो गए। उन्होंने डेटा दिखाया, जिसमें डुप्लिकेट एंट्रीज और फर्जी एंट्रिज थीं। एक व्यक्ति का नाम गुरकीरत सिंह का था, जो दो जगह दर्ज था। दूसरा उदाहरण परसम गोदाबाई का, जिन्होंने कहा कि उनके नाम के साथ 12 वोटर काटे गए। राहुल ने आरोप लगाया कि यह सब चुनाव आयोग की मिलीभगत से हुआ।

यह अभियान सोशल मीडिया पर तेजी से फैला। एक्स पर हजारों पोस्ट आए, जहां लोग #वोटचोरी हैशटैग इस्तेमाल कर रहे थे। युवा बेरोजगारी को भी इससे जोड़ा गया। राहुल ने कहा कि युवाओं के वोट काटकर सत्ता पक्ष फायदा उठा रहा है। लेकिन चुनाव आयोग ने इन दावों को खारिज किया। उन्होंने कहा कि वोटर लिस्ट की सफाई नियमित प्रक्रिया है। कोई हेराफेरी नहीं हुई। भाजपा ने भी इसे राजनीतिक ड्रामा बताया। फिर भी, विपक्ष ने सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किए। अगस्त 11 को दिल्ली में मार्च निकाला गया, जहां राहुल समेत कई नेता हिरासत में लिए गए।

यह शुरुआत छोटी लगी, लेकिन धीरे-धीरे बड़ा रूप ले लिया। लोग सोचने लगे कि क्या हमारा वोट सुरक्षित है? सरल सवाल है, लेकिन जवाब जटिल। एक तरफ राहुल के सबूत, दूसरी तरफ आयोग का इनकार। यह बहस लोकतंत्र की जड़ों को छू रही है। छोटे-छोटे उदाहरणों से बड़ा चित्र बन रहा था। कर्नाटक से शुरू होकर उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैल गया। राजनीतिक दल इसे अपने हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहे थे।



लेकिन सच्चाई क्या है? अगले हिस्से में देखते हैं।

बीबीसी की नजर: जांच ने क्या खोला?

बीबीसी की जांच ने इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा दिया। सितंबर 18, 2025 को बीबीसी ने एक रिपोर्ट छपी, जिसमें राहुल गांधी के दावों का जिक्र था। रिपोर्ट में कहा गया कि चुनाव आयोग वोट चोरों को बचा रहा है। बीबीसी ने कर्नाटक के आलंद क्षेत्र की पड़ताल की। वहां 6,018 वोट काटे गए, जो फर्जी लॉगिन से हुए। एक व्यक्ति सूर्यकांत ने 14 मिनट में 12 वोट काटे, जिसमें बबीता चौधरी का नाम भी था। दोनों को पता ही नहीं था। बीबीसी ने इसे 'वोट थेफ्ट' का उदाहरण बताया।

सितंबर 27 को एक्स और इंस्टाग्राम पर वीडियो वायरल हुए। कांग्रेस ने पोस्ट किया कि बीबीसी की जांच राहुल के सबूतों की पुष्टि करती है। वीडियो में बीबीसी का ग्राउंड रिपोर्ट दिखाया गया, जहां वोटर लिस्ट में गड़बड़ी के सबूत थे। एक पोस्ट में लिखा था, 'बीबीसी ने वोट चोरी का खुलासा किया।' यह वीडियो लाखों बार देखा गया। लेकिन बीबीसी ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह स्वतंत्र जांच है, न कि आधिकारिक पुष्टि।

दूसरी तरफ, चुनाव आयोग ने बीबीसी को भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि ये आरोप बेबुनियाद हैं। वोटर लिस्ट में बदलाव पारदर्शी तरीके से होते हैं। भाजपा ने इसे विदेशी साजिश बताया। एक रिपोर्ट में कहा गया कि राहुल के दावे पुराने वाइन नई बोतल हैं। फिर भी, बीबीसी की रिपोर्ट ने बहस छेड़ दी। लोग सोच रहे हैं कि क्या अंतरराष्ट्रीय मीडिया हमारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर सवाल उठा सकता है? यह सवाल छोटा है, लेकिन गहरा असर डालता है। जांच ने कुछ तथ्य उजागर किए, लेकिन पूरी सच्चाई अभी भी धुंधली है। विपक्ष इसे जीत मान रहा है, सत्ता पक्ष चुनौती।

दक्षिण अमेरिका की सैर: बयानबाजी ने क्यों भड़काई आग?

राहुल गांधी की दक्षिण अमेरिका यात्रा अगस्त 2025 में हुई। वहां उन्होंने ब्राजील के विपक्षी नेताओं से मुलाकात की। ट्रंप के ब्राजील वाले बयान के बाद राहुल ने कहा कि भारत में भी चुनावी धांधली हो रही है। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में 'क्रिमिनल एविडेंस' पेश किया। वोट मैनिपुलेशन के उदाहरण दिए, जैसे नागराज ने सुबह 4:07 बजे 36 सेकंड में दो फॉर्म भरे। यह यात्रा छोटी थी, लेकिन बयानों ने बड़ा हलचल मचा दिया।

भारत लौटते ही राहुल ने कहा कि दक्षिण अमेरिका में लोग हमारी कहानी सुनकर हैरान हुए। उन्होंने वोट चोरी को बेरोजगारी से जोड़ा। युवा वोट कटवाकर सत्ता पक्ष फायदा उठा रहा है। यह बयान सोशल मीडिया पर वायरल हो गए। एक्स पर #राहुलगांधी ट्रेंड किया। लेकिन सरकार ने इसे विदेशी दबाव बताया। विदेश मंत्रालय ने कहा कि ऐसे बयान देश की छवि खराब करते हैं।

यात्रा ने अभियान को नई ऊंचाई दी। राहुल ने कहा कि यह सिर्फ कांग्रेस का मुद्दा नहीं, बल्कि हर नागरिक का है। लोग सोचने लगे कि क्या वैश्विक स्तर पर हमारी चुनाव प्रक्रिया पर सवाल उठाना ठीक है? एक तरफ यात्रा ने जागरूकता बढ़ाई, दूसरी तरफ विवाद। बयान सरल थे, लेकिन असर गहरा। यह दिखाता है कि राजनीति अब सीमाओं से परे है। छोटे बयान बड़े बदलाव ला सकते हैं। लेकिन सवाल वही, सबूत कितने मजबूत हैं?

बिहार चुनाव की दहलीज पर: पारदर्शिता की पुकार

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 से ठीक पहले यह मुद्दा गरम हो गया। जुलाई 2025 में विशेष गहन पुनरीक्षण शुरू हुआ। रिपोर्ट्स में कहा गया कि ढाका विधानसभा में 80,000

मुस्लिम वोटर्स के नाम काटने की कोशिश हुई। विपक्ष ने इसे साजिश बताया। राहुल गांधी ने बिहार में रैली की, जहां उन्होंने वोटर लिस्ट की जांच की मांग की। कांग्रेस, आरजेडी और अन्य दलों ने संयुक्त विरोध किया।

चुनाव आयोग ने कहा कि यह सफाई अभियान है, ताकि फर्जी वोटर न रहें। लेकिन विपक्ष का कहना है कि यह अल्पसंख्यकों को निशाना बना रहा है। एक रिपोर्ट में कहा गया कि पूर्वी चंपारण में भाजपा के नाम पर नाम काटे गए। सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर हुई। विपक्ष ने कहा कि ईवीएम की विश्वसनीयता पर भी सवाल है। बिहार में 243 सीटें हैं, और हर वोट कीमती।

यह मांग पारदर्शिता की है। विपक्ष कहता है कि वोटर आईडी कार्ड से वेरिफिकेशन हो। सरकार ने ई-साइन फीचर लॉन्च किया, आधार से लिंक करके। लेकिन राहुल ने कहा कि यह चोरी पकड़े जाने के बाद का ताला है। बिहार के लोग चिंतित हैं। क्या उनका वोट गायब हो जाएगा? यह सवाल हर घर में है। एक तरफ सफाई का नाम, दूसरी तरफ साजिश का शक। चुनाव नजदीक हैं, और पारदर्शिता की मांग तेज हो रही है।

लोकतंत्र का पहरा: विपक्ष की जिम्मेदारी और उलझें सवाल

विपक्ष की भूमिका लोकतंत्र की रक्षा में अहम है। राहुल गांधी कहते हैं कि वोट चोरी रोकना हमारा फर्ज है। यह अभियान ने लोगों को जागरूक किया। बहसें चल रही हैं ईवीएम पर, वोटर लिस्ट पर। एक रिपोर्ट में कहा गया कि 2024 चुनाव में भाजपा को 38 सीटें कम मिलीं, लेकिन विपक्ष को भी नुकसान हुआ।

लेकिन सवाल यह भी कि क्या सबूत पर्याप्त हैं? चुनाव आयोग कहता है कि सब कुछ पारदर्शी है। सुप्रीम कोर्ट ने भी हस्तक्षेप नहीं किया। राजनीतिक रूप से सक्रिय लोग कहते हैं कि यह बहस जरूरी है। युवा सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। एक पोस्ट में लिखा था, 'वोट चोरी मतलब लोकतंत्र की चोरी।' यह सही लगता है।

फिर भी, संतुलन बनाना जरूरी। सत्ता पक्ष कहता है कि विपक्ष हार मानने के बाद बहाने बना रहा है। लेकिन विपक्ष का कहना है कि सवाल उठाना ही लोकतंत्र है। बिहार चुनाव में यह मुद्दा फैसला कर सकता है। लोग सोचें, क्या हमारा वोट सुरक्षित रहेगा? यह सवाल विचार करने लायक है। छोटे कदम से बड़ा बदलाव आ सकता है। विपक्ष अगर मजबूत रहा, तो लोकतंत्र मजबूत होगा। लेकिन सच्चाई सामने लाने के लिए और सबूत चाहिए। बहस जारी रहे, ताकि हर वोट की कीमत बने।

यह मुद्दा हमें सोचने पर मजबूर करता है। क्या हमारी चुनाव प्रक्रिया मजबूत है? राहुल गांधी का अभियान, बीबीसी की जांच, बिहार की मांगें—सब मिलकर एक कहानी बुन रहे हैं। सरल भाषा में कहें, तो वोट हमारा हक है। इसे बचाना सबका फर्ज। आने वाले दिनों में और खुलासा हो सकते हैं। तब तक, जागरूक रहें। लोकतंत्र की रक्षा हर नागरिक का काम है।

भारत का सेमीकंडक्टर सपना

18 अरब डॉलर की बड़ी सौगात

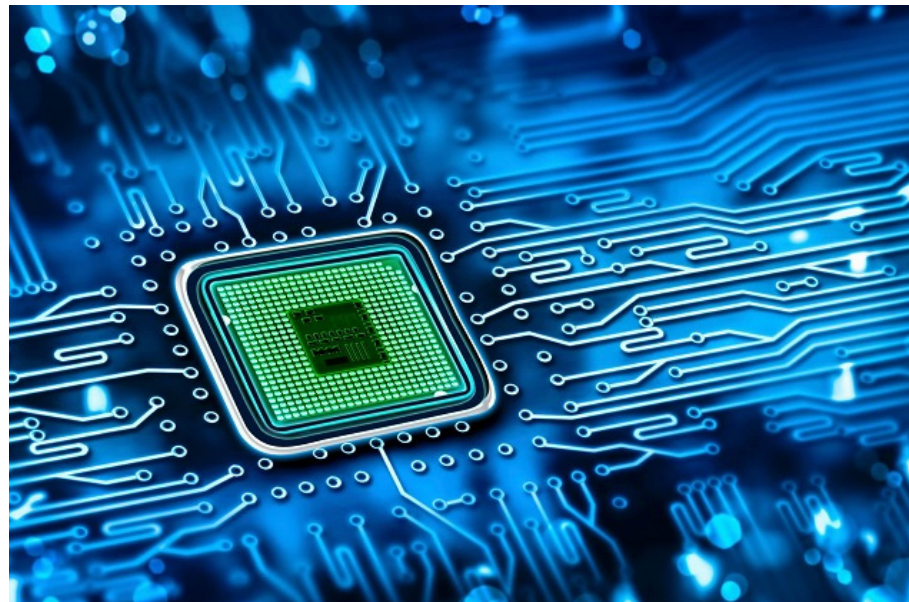
भारत में तकनीक का दौर तेजी से बदल रहा है। आज हर चीज में चिप्स लगी हैं — आपके फोन से लेकर कार तक। लेकिन हम अभी भी ज्यादातर चिप्स बाहर से आयात करते हैं। यह निर्भरता हमें कमजोर बनाती है। खासकर जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में कोई रुकावट आती है, जैसे महामारी के समय हुआ था। इसी समस्या को हल करने के लिए सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है। सितंबर 2025 में, भारत ने 18 अरब डॉलर का निवेश घोषित किया है, जो सेमीकंडक्टर उद्योग को घरेलू स्तर पर मजबूत बनाने के लिए है। यह निवेश निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ मिलकर किया जा रहा है। कुल 10 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिनकी कुल लागत 1.6 ट्रिलियन रुपये के आसपास है। यह सिर्फ पैसे का मामला नहीं है, बल्कि एक रणनीति है जो भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण का वैश्विक केंद्र बनाने का सपना देखती है।

इस निवेश का उद्देश्य साफ है: आयात पर निर्भरता कम करना। आज भारत 100 अरब डॉलर से ज्यादा का सेमीकंडक्टर आयात करता है। अगर हम खुद चिप्स बनाना सीख लें, तो अरबों रुपये बचेंगे। साथ ही, आईटी और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों को मजबूती मिलेगी। 'मेक इन इंडिया' अभियान का यह हिस्सा है, जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक कदम है। लेकिन क्या यह इतना आसान है? वैश्विक बाजार में ताइवान और दक्षिण कोरिया जैसे देश पहले से मजबूत हैं। फिर भी, भारत की युवा आबादी और बढ़ती अर्थव्यवस्था इसे संभव बना सकती है। आइए, इसकी गहराई में उतरें। यह निवेश न सिर्फ अर्थव्यवस्था को बदल सकता है, बल्कि लाखों युवाओं के लिए नई संभावनाएं खोल सकता है। क्या हम तैयार हैं इस बदलाव के लिए?

सेमीकंडक्टर मिशन की शुरुआत 2021 में हुई थी, लेकिन 2025 में यह तेज गति पकड़ चुका है। बजट 2025 में सेमीकंडक्टर फंडिंग को 83 प्रतिशत बढ़ाकर 7,000 करोड़ रुपये किया गया। यह दिखाता है कि सरकार कितनी गंभीर है। सितंबर में हुए सेमिकॉन इंडिया 2025 इवेंट ने भी इसकी चर्चा बढ़ाई, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका उद्घाटन किया। यह इवेंट 2 से 4 सितंबर तक नई दिल्ली में चला। यहां वैश्विक नेता इकट्ठा हुए, और भारत की क्षमता पर चर्चा हुई। लेकिन अब सवाल यह है कि यह निवेश कैसे काम करेगा? चलिए, अगले हिस्सों में देखते हैं।

कौन-कौन सी कंपनियां जुड़ रही हैं इस सफर में?

इस 18 अरब डॉलर के निवेश में कई बड़ी कंपनियां शामिल हो रही हैं। कुल 10 परियोजनाएं मंजूर हुई हैं, जो छह राज्यों में फैली हुई हैं। इनमें फैब्रिकेशन प्लांट्स से लेकर टेस्टिंग और पैकेजिंग यूनिट्स तक सब कुछ है। सबसे बड़ा प्रोजेक्ट टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स का है। यह गुजरात के धोलेरा में 910 अरब रुपये से ज्यादा का निवेश कर रहा है। टाटा ने ताइवान की पावरचिप सेमीकंडक्टर के



साथ साझेदारी की है। यह एक बड़ा फैब प्लांट होगा, जो महीने में 50,000 वेफर्स बना सकेगा। सोचिए, इससे कितनी चिप्स निकलेंगी!

दूसरी तरफ, माइक्रॉन टेक्नोलॉजी अमेरिका की कंपनी है, जो गुजरात के सानंद में 225 अरब रुपये लगा रही है। यह असेंबली, टेस्ट, मार्किंग और पैकेजिंग (एटीएमपी) सुविधा होगी। असेंबली का मतलब है चिप्स को जोड़ना, टेस्टिंग का मतलब जांचना। यह प्लांट ड्राम चिप्स पर फोकस करेगा, जो मोबाइल और कंप्यूटर में इस्तेमाल होती हैं। फिर टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ही असम के जगिरोद में 270 अरब रुपये का सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट प्लांट लगा रहा है। असम जैसे क्षेत्र में यह निवेश स्थानीय विकास को बढ़ावा देगा।

एचसीएल और फॉक्सकॉन की जॉइंट वेंचर वामा सुंदरी इन्वेस्टमेंट्स उत्तर प्रदेश में दो प्लांट्स बना रही है। एक जेवर एयरपोर्ट के पास 37 अरब रुपये का, और दूसरा नोएडा सेक्टर 28 में 37 अरब रुपये का। दोनों आउटसोर्सिंग सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओएसएटी) यूनिट्स हैं। ओएसएटी का काम चिप्स को तैयार करना है, बिना खुद फैब बनाए। कायनेस सेमिकॉन गुजरात के सानंद में 33 अरब रुपये का सेमीकंडक्टर यूनिट लगा रही है।

सीजी पावर गुजरात में रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स और स्टार्स माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स के साथ मिलकर काम कर रही है। पायलट ओएसएटी प्लांट 222 मिलियन डॉलर का है, और कुल पांच साल में 791 मिलियन डॉलर। मुख्य प्लांट दिसंबर 2026 तक तैयार होगा। ओडिशा में पहला कर्मशियल सिलिकॉन कार्बाइड फैब बन रहा है। सिकसेम प्राइवेट लिमिटेड यूके की क्लास-सीसी वेफर फैब के साथ है। यह कंपाउंड सेमीकंडक्टर फैब है, जो इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए उपयोगी होगा।

अन्य चार प्रोजेक्ट्स अगस्त 2025 में मंजूर हुए: कंटिनेंटल डिवाइस इंडिया (सीडीआईएल), 3डी ग्लास सॉल्यूशंस इंक, और एएसआईपी टेक्नोलॉजीज

दक्षिण कोरिया की एपैक के साथ। ये ओडिशा, पंजाब या आंध्र प्रदेश में हो सकते हैं। 3डी ग्लास एडवांस्ड पैकेजिंग पर फोकस करेगी। कुल मिलाकर, ये प्रोजेक्ट्स ताइवान, यूके, अमेरिका और कोरिया जैसी कंपनियों को भारत खींच ला रहे हैं। यह साझेदारी का अच्छा उदाहरण है। लेकिन क्या ये सभी समय पर पूरा होंगे? कुछ जगहों पर जमीन और बुनियादी ढांचे की समस्या है। फिर भी, यह विविधता दिखाती है कि भारत हर तरह की चिप बनाने की कोशिश कर रहा है — साधारण से लेकर उन्नत तक।

इन प्रोजेक्ट्स में सरकार 50 प्रतिशत फिस्कल सपोर्ट दे रही है। मतलब, प्रोजेक्ट कॉस्ट का आधा हिस्सा सरकार वहन करेगी। फैब्स और डिस्ट्रिब्यूटिव फैब्स के लिए यह सपोर्ट समान आधार पर है। कंपाउंड सेमीकंडक्टर, सेंसर और ओएसएटी के लिए भी 50 प्रतिशत कैपिटल एक्सपेंडीचर पर सहायता। डिजाइन लिंकड इंसेंटिव स्कीम में पांच साल तक फाइनेंशियल मदद और डिजाइन इंफ्रास्ट्रक्चर सपोर्ट। यह प्रोत्साहन निजी कंपनियों को आकर्षित कर रहा है। बिना इसके, इतना बड़ा निवेश मुश्किल होता।

ससे क्या फायदा होगा? नौकरियां, आत्मनिर्भरता और अर्थव्यवस्था

यह निवेश सिर्फ चिप्स बनाने का नहीं, बल्कि पूरे देश को बदलने का है। सबसे बड़ा फायदा नौकरियों का। अनुमान है कि इससे लाखों डायरेक्ट और इंडायरेक्ट जॉब्स पैदा होंगे। मैन्युफैक्चरिंग, डिजाइन, लॉजिस्टिक्स और सर्विसेज में। कल्पना कीजिए, गुजरात और असम जैसे राज्यों में युवा इंजीनियर चिप्स डिजाइन करेंगे। आज बेरोजगारी एक समस्या है, लेकिन हाई-टेक जॉब्स से युवाओं को स्किल्ड बनने का मौका मिलेगा। ट्रेनिंग प्रोग्राम्स भी चलेंगे, ताकि लोकल टैलेंट तैयार हो।

आत्मनिर्भरता का सवाल बड़ा है। अभी हम चिप्स के लिए बाहर देखते हैं। लेकिन अगर घर पर फैब्स बन जाएं, तो आपूर्ति की चिंता कम होगी। रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स

और डिफेंस सेक्टर मजबूत होंगे। इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए सिलिकॉन कार्बाइड चिप्स ओडिशा से आएंगी। ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री को फायदा, क्योंकि कारों में सेंसर और चिप्स लगते हैं। आईटी सेक्टर भी बढ़ेगा, क्योंकि सर्वर और डेटा सेंटर्स के लिए चिप्स चाहिए। कुल मिलाकर, इलेक्ट्रॉनिक्स मार्केट में भारत का शेयर बढ़ेगा।

अर्थव्यवस्था पर असर गहरा होगा। आयात बचेगा, निर्यात बढ़ेगा। विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) और एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर बनेंगे। इससे सप्लाय चेन मजबूत होगी। रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर फोकस से इनोवेशन आएगा। उदाहरण के लिए, एआरएम जैसी कंपनी भारत में एडवांस्ड चिप्स डिजाइन कर रही है। यह वैल्यू चेन में ऊपर चढ़ने का तरीका है।

लेकिन फायदे सिर्फ आंकड़ों में नहीं। ग्रामीण इलाकों में भी विकास होगा। असम का जगिरोद पहले से पिछड़ा था, अब वह हाई-टेक हब बनेगा। महिलाओं और स्थानीय लोगों को जॉब्स मिलेंगी। पर्यावरण पर भी सोचें — ग्रीन टेक्नोलॉजी से सस्टेनेबल ग्रोथ। हालांकि, सब कुछ सकारात्मक नहीं। क्या ये जॉब्स सभी को मिल पाएंगी? स्किल गैप एक मुद्दा है। फिर भी, लंबे समय में यह निवेश भारत को वैश्विक सप्लायर बना सकता है। सोचिए, आने वाले सालों में 'मेड इन इंडिया' चिप्स दुनिया भर में बिकेंगी। यह गर्व की बात होगी।

रास्ते में चुनौतियां: क्या आसान नहीं होगा यह सफर?

हर बड़ा सपना चुनौतियों से भरा होता है। सेमीकंडक्टर उद्योग में भी यही है। सबसे पहले, ऊंची लागत। एक फैब प्लांट बनाने में अरबों रुपये लगते हैं। भारत को विदेशी टेक्नोलॉजी ट्रांसफर चाहिए, लेकिन एक्सपोर्ट कंट्रोल्स बाधा हैं। ताइवान और कोरिया सालों से इस फील्ड में हैं, हम नौसिखिए। टैलेंट की कमी भी बड़ी समस्या। इंजीनियर्स और टेक्नीशियन कम हैं। लोकल सप्लायर्स का नेटवर्क बनाना पड़ेगा — केमिकल्स, इक्विपमेंट सब।

लॉजिस्टिक्स का मुद्दा है। प्लांट्स बाढ़-मुक्त, वाइब्रेशन-फ्री जगहों पर चाहिए। रोड कनेक्टिविटी मजबूत हो। पॉलिसी में टैक्स, ट्रेड, लेबर रेट्स पर बदलाव लाने पड़ेंगे। स्पेशलिटी केमिकल्स की जरूरत, जो अल्ट्रा-हाई प्योरिटी के हों। अभी भारत 2एनएम चिप्स बनाने से दूर है। नॉन-कोर काम जैसे टेस्टिंग में लोकल टैलेंट ठीक, लेकिन कोर डिजाइन में विदेशी मदद चाहिए।

फिर, ग्लोबल कॉम्पिटिशन। चीन और अमेरिका के बीच तनाव से सप्लाय चेन प्रभावित हो सकती है। भारत को बैलेंस बनाना पड़ेगा। पर्यावरणीय चिंताएं भी हैं — फैब्स पानी और बिजली बहुत खर्च करती हैं। सरकार को ग्रीन प्रैक्टिसेज पर फोकस करना होगा। अगस्त 2025 में गाइडलाइंस में संशोधन हुआ, जो मदद करेगा। लेकिन क्या ये चुनौतियां हमें रोकेगी? नहीं। दक्षिण कोरिया ने भी यही रास्ता अपनाया था। धैर्य और निवेश से संभव है। यह सफर कठिन है, लेकिन सफलता की चमक दूर नहीं।

सिर्फ 9.99 लाख में नई Mahindra Thar Facelift लॉन्च

Thar Facelift में स्टाइल, फीचर्स और दमदार रोड प्रेजेंस



@ सौम्या चौबे

भारतीय ऑटो इंडस्ट्री में Mahindra Thar का नाम हमेशा से ऑफ-रोडिंग के लिए प्रतिष्ठित रहा है। सेकेंड जनरेशन Thar ने पिछले पांच सालों में युवा ग्राहकों और ऑफ-रोडिंग के शौकीनों के बीच अपनी मजबूत पकड़ बनाई थी। इस लोकप्रियता को और बढ़ाते हुए Mahindra ने अब Thar Facelift 2025 को लॉन्च कर दिया है। इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत नौ लाख निन्यानवे हजार रुपये रखी गई है, जो कि इसे किफायती बनाती है। नई Thar अब दो नए आकर्षक रंगों में उपलब्ध होगी – बैटलशिप ग्रे और टैगो रेड। इसके अलावा पहले पसंद किए जाने वाले रंग विकल्प जैसे गैलेक्सी ग्रे, स्टेल्थ ब्लैक, डीप फॉरेस्ट और एक्वेस्ट व्हाइट अब भी ग्राहकों को उपलब्ध रहेंगे।

बाहरी रूप से नई Thar पुराने मॉडल जैसी ही दिखती है, लेकिन इसमें कुछ महत्वपूर्ण कॉस्मेटिक अपडेट्स किए गए हैं। इसमें नया बॉडी-कलर्ड ग्रिल दिया गया है, जो पहले केवल ब्लैक रंग में उपलब्ध था। इसके साथ ही नया डुअल-टोन बंपर भी गाड़ी को और आकर्षक

बनाता है। साइड प्रोफाइल में कोई बड़ा बदलाव नहीं किया गया है, जिससे क्लासिक रफ-टफ लुक बरकरार रहता है। रियर हिस्से में अब रियर वाइपर विड वॉशर और रियर कैमरा दिया गया है, जो पार्किंग और रिवर्सिंग को आसान बनाता है। इन बदलावों के बावजूद Thar का मजबूत और दमदार स्टाइल बना हुआ है, जो इसे शहर में भी प्रीमियम और ऑफ-रोडिंग के लिए आदर्श बनाता है।

केबिन और इंटीरियर की बात करें तो Mahindra ने कई अहम अपग्रेड्स शामिल किए हैं। नया टच स्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम अब नेविगेशन, म्यूजिक और स्मार्ट कनेक्टिविटी को और आसान और इंटरैक्टिव बनाता है। इसके अलावा नया स्टीयरिंग व्हील भी बेहतर ग्रिप और प्रीमियम फील प्रदान करता है। सेफ्टी के लिहाज से टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS) जैसी आधुनिक सुविधाएं दी गई हैं। वहीं, सॉफ्ट-टॉप को हटाकर Hard Top और Convertible Hard Top विकल्पों को प्राथमिकता दी गई है, जिससे वाहन का रूप और मजबूत हो गया है।

नई Thar Facelift में इंजन विकल्प पुराने मॉडल की तरह ही रखे गए हैं, लेकिन ड्राइविंग अनुभव को बेहतर बनाने के लिए सॉफ्टवेयर अपडेट और टेक्निकल सुधार

किए गए हैं। बेस मॉडल में 1.5-लीटर डीजल RWD MT इंजन उपलब्ध है, जिसकी कीमत एक्स-शोरूम 9.99 लाख रुपये रखी गई है। टॉप मॉडल में 2.2-लीटर डीजल 4x4 AT इंजन दिया गया है, जिसकी कीमत 16.99 लाख रुपये है। Mahindra ने वैरिएंट का नाम बदलकर AX से AXT और LX से LXT कर दिया है। नए बेस मॉडल की कीमत पुराने मॉडल की तुलना में 32,000 रुपये कम है, जबकि टॉप मॉडल पुराने मॉडल की तुलना में 38,000 रुपये महंगा है।

इस नई Thar Facelift का प्रमुख आकर्षण इसके स्टाइल और फीचर्स का संतुलन है। यह वाहन अभी भी रफ-टफ लुक और दमदार रोड प्रेजेंस के लिए जाना जाता है, लेकिन अब इसमें आधुनिक तकनीक और आरामदायक केबिन की सुविधा भी जोड़ दी गई है। ऑफ-रोडिंग के शौकीनों के लिए यह वाहन सभी ज़रूरी फीचर्स के साथ आता है, जैसे बेहतर ग्राउंड क्लियरेंस, 4x4 ड्राइविंग मोड और टिकाऊ सस्पेंशन। वहीं, शहर में इसे चलाना भी सुविधाजनक है, क्योंकि इसमें आधुनिक कनेक्टिविटी और सुरक्षा फीचर्स मौजूद हैं।

बाजार विश्लेषकों का मानना है कि नई Thar

Facelift भारतीय ऑटो मार्केट में पुराने मॉडल की तुलना में बेहतर प्रतिस्पर्धा करेगी। इसकी कीमत और फीचर्स के मिश्रण ने इसे युवा और परिवार दोनों के लिए आकर्षक विकल्प बना दिया है। छोटे शहरों और मिड-टियर शहरों में यह वाहन अपनी दमदार छवि और ऑफ-रोडिंग क्षमता के कारण विशेष रूप से लोकप्रिय हो सकता है। इसके साथ ही नए रंग विकल्प और प्रीमियम इंटीरियर इसे शहरी ग्राहकों के लिए भी स्टाइलिश विकल्प बनाते हैं।

Mahindra Thar Facelift इस वर्ष भारतीय SUV मार्केट में एक महत्वपूर्ण लॉन्च के रूप में सामने आई है। इसके कॉस्मेटिक अपडेट्स, नए रंग विकल्प, उन्नत इंटीरियर और किफायती कीमत इसे युवा और ऑफ-रोडिंग प्रेमियों के बीच और लोकप्रिय बनाएंगे। यह वाहन अपनी दमदार छवि के साथ भारतीय बाजार में अपनी जगह बनाए रखने के लिए तैयार है। पुराने मॉडल की तुलना में मूल्य और फीचर्स में किए गए सुधार इसे और भी प्रतिस्पर्धी बनाते हैं। कुल मिलाकर, Mahindra Thar Facelift एक ऐसा SUV विकल्प है जो ऑफ-रोडिंग, स्टाइल और आधुनिक सुविधाओं का संतुलित मिश्रण पेश करता है।



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries